॥ दो शब्द ॥

हमारी संसकृति मे संगीत का स्थान सर्वोपरि है । प्राचीन हिन्दु सभ्यता मे गायन को अत्यन्त महत्व मिला है । हमारे वेद उपनिषद पुराण एवं अन्य ग्रन्थ पद्य मे ही लिखे गये हैं । आदि काव्य रामायण भी पद्य मे ही लिखागया है । गीता का अर्थ ही है जो गाया गया हो । अतः कहना न होगा कि गायन का सीधा सम्बन्ध जहाँ हमारी सभ्यता की जडों से है वहीं यह एक भगवत प्राप्ती का सशक्त माध्यम भी है ॥

हमारे सन्तों ने परमात्मा की प्राप्ती के प्रमुख उपायों मे भक्ती को प्रधानता दी है । देवर्षि नारद की परम्परा के सन्तों ने भगवान के दिव्या गुणानुवाद गा कर ही उन्हे प्राप्त किया है । गायन मे रस है और रस रूप ही परमात्मा है । हृदय जब पिघलता है तभी वह भाव बन कर बहता है और उसी स्थिति का नाम है भजन ॥

भक्त जब भगवान के स्वरूप परक या लीला परक अथवा गुण परक भावों को गाता है तब उसके भीतर का कल्मश बह जाता है । अभिमान का पर्वत ढह जाता है और जीव निर्विकार हो जाता है । फिर चाहे वह सगुण साकार का भजन करे अथवा निर्गुण निराकार का । भजन का उद्देश्य है मानसिक शान्ती, बौद्धिक विकाश एवं आत्म ज्ञान के प्रकाश के साथ साथ भगवत तत्व का अनुभव कराना ॥

गत वर्ष की भांती इस वर्ष भी श्री शेखर परिवार ने इस सरल भजनावली को स्वर्गीया विनिता शेखर जी की पवित्र स्मृति मे छपवाकर आप तक पहुँचाया है । भगवान से यही प्रार्थना है कि इस परिवार का यह दिव्य प्रयास सफल रहे ॥

हिन्दु समाज मे भजनों का खूव प्रचलन होने के कारण बहुत अधिक मात्रा मे भजन उपलब्ध हैं । मीरा, सूर, कबीर , एवं तुलसी के साथ साथ आधुनिक भक्तों की भी अनेक रचनायें उपलब्ध हैं । जब इन सब मे से कुछ भजनों को चुनने की बारी आई तो हम असफल हो गये क्यों कि हर भजन अपने आप मे सुन्दर लगा । इस समस्या के समाधान हेतु भक्त हृदय श्री दीपक सहाय जी का सहयोग मिला जिन्होंने "जैसे हंस मणियों मे मोती को परख लेता है उसी प्रकार" इस भजनावली का संग्रह कर हिन्दी मे टाइप करने मे सहयोग पहुँचाया । अन्त मे हिन्दु हेरिटेज सोसाइटी के द्वारा प्रकाशित इस भजनावली को आप की सेवा मे प्रस्तुत करते हुये एकबार पुनः हर्ष का अनुभव हो रहा है । सोसाइटी का विश्वास है कि आप इस प्रकाशन से पूरा पूरा लाभ उठायेंगे ।

भवदीय

पंडित नारायण भट्ट

हैं आंख वो जो श्याम का दरशन किया करे
हैं शीश जो प्रभु चरण में बंदन किया करे।
बेकार वो मुख हैं जो रहे व्यर्थ बातों मे
मुख वो हैं जो हरि नाम का सुमिरन किया करे।
हीरे मोती से नही शोभा हैं हाँथ की
हैं हाँथ जो भगवान का पूजन किया करे।
मर कर भी अमर नाम हैं उस जीव का जग मे
प्रभु प्रेम में बलिदान जो जीवन किया करे।

एक प्यास काफी है सागर तक जाने को
एक नजर काफी है प्रभु दर्शन पाने को
एक अग्नि काफी है क्रान्तियाँ उठा ने को
एक लग्न काफी है मुक्ति मधुर पा ने को

॥ भजन सूची ॥

क्रम	भजन	अक्षर	पृष्ठ
१ ॥	अधरं मधुरम्	अ	०७
२ ॥	अब सौंपदिया इस जीवन का	अ	०८
३ ॥	अनुपम माधुरी जोडी	अ	०८
४ ॥	अगोचर शक्ती अनुपम है	अ	९
५ ॥	आयेगा जब रे बुलावा	आ	९
६ ॥	अमर आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ	अ	१०
७ ॥	इतनी शक्ति हमें देना दाता	इ	११
८ ॥	उठ जाग मुसाफिर भोर भई	उ	१२
९ ॥	उद्धार करो भगवान	उ	१२
१० ॥	ॐ है जीवन हमारा	ॐ	१३
११ ॥	ॐ नमः शिवाय मंगलम	ॐ	१३
१२ ॥	ऐ मालिक तेरे बंदे हम	ए	१४
१३ ॥	ऐसी लागी लगन	ए	१४
१४ ॥	ऐसा प्यार बहादे मैया	ए	१५
१५ ॥	कभी राम बनके कभी श्याम बनके	क	१५
१६ ॥	किस देवता ने आज मेरा	क	१६
१७ ॥	कोई कहे गोविन्द कोई गोपाला	क	१६
१८ ॥	कृष्ण गोविंद् गोपाल गाते चलो	क	१७
१९ ॥	कृष्ण जिनका नाम है	क	१७
२० ॥	श्री कृष्ण शरणम मम	क	१८
२१ ॥	कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण बोल रे मना	क	१८
२२ ॥	कैलाश के निवासी तुम्हे	क	१९
२३ ॥	कौन कहता है भगवान आते नहीं	क	१९
२४ ॥	गाइये गणपति जग वन्दन	ग	२०
२५ ॥	गुंजे सदा जयकार हो भोले तेरे भवन मे	ग	२०
२६ ॥	गोविन्द हरि गोपाल हरि	ग	२०
२७ ॥	गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है	ग	२१
२८ ॥	मैंने लीनो गोविन्द मोल	ग	२१
२९ ॥	घूंघट के पट खोल रे	ध	२२
३० ॥	चलो मन गंगा जमुना तीर	च	२२
३१ ॥	चोरी माखन की तू छोड	च	२२
३२ ॥	छुम छुम बाजे पायलिया	छ	२३

क्रम	भजन	अक्षर	पृष्ठ
३३ ॥	छोटी छोटी गईया छोटे छोटे ग्वाल	छ	२३
३४ ॥	जय जय गणपति जय जय गणेश	ज	२३
३५ ॥	जय गणेश देवा	ज	२४
३६ ॥	जग में सुन्दर हैं दो नाम चाहे कृष्ण कहो या राम	ज	२४
३७ ॥	जय गोविंदा गोपाला	ज	२५
३८ ॥	जनम तेरा बातों ही बीत गयो	ज	२५
३९ ॥	जिनके हृदय हरी नाम बसे	ज	२६
४० ॥	जै जै नारायण नारायण हरि हरि	ज	२६
४१ ॥	जय जय जय हनुमान गोसाई	ज	२७
४२ ॥	जै हनुमान मंगल मूरत मारुती नन्दन	ज	२७
४३ ॥	जर्रे जर्रे मे है झाँकी भगवान की	ज	२८
४४ ॥	ज्योत से ज्योत जगाते चलो	ज	२९
४५ ॥	डमरु बजाये शिव शंकर	ड	२९
४६ ॥	तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार्	त	३०
४७ ॥	तेरा रंग काला क्यूं	त	३१
४८ ॥	तेरी बन जैहैं गोबिन्द गुन गाये से	त	३२
४९ ॥	तेरे दर्शन से भगवान	त	३२
५० ॥	तेरे पूजन को भगवान	त	३३
५१ ॥	तेरी मेहरवानी का है बोझ इतना	त	३३
५२ ॥	तोरा मन दर्पन कहलाये	त	३४
५३ ॥	तूँ प्यार का सागर है	त	३४
५४ ॥	दरबार में बंशी वाले के	द	३५
५५ ॥	दर्शन दो घनश्याम नाथ	द	३५
५६ ॥	दया कर दान भक्ती का	द	३६
५७ ॥	दूर नगरी बड़ी दूर नगरी	द	३६
५८ ॥	प्रसिद्ध दोहे	द	३७
५९ ॥	प्रसिद्ध दोहे माटी कहे कुम्हार से	द	३७
६० ॥	नारायण दीन दयाल रे	न	३८
६१ ॥	नाम दिलसे न भूलो हरिका	न	३९
६२ ॥	नारायण भज भाई रे	न	३९
६३ ॥	नटवर नागर नन्दा	न	४०
६३ ॥	नटराज स्तुति	न	४०
६४ ॥	नैया पार लगा ओ	न	४१
६५ ॥	पायो जी मैंने राम रतन धन	प	४१

क्रम	भजन	अक्षर	पृष्ठ
६६ ॥	पग घुन्घरू बांध मीरा नाची रे	प	४१
६७ ॥	पितु मातु सहायक स्वामि-सखा	प	४२
६८ ॥	प्रभु मेरे अवगुण चित्त न धरो	प	४२
६९ ॥	पिये राम नाम का प्याला	प	४३
७० ॥	प्रेम की अगन हो भक्ति सघन	प	४३
७१ ॥	प्रबल प्रेम के पाले पड कर	प	४४
७२ ॥	प्रेम मुदित मन से कहो	प	४४
७३ ॥	बड़ी देर भई नन्दलाला	ब	४५
७४ ॥	बनवारी रे जीने का सहारा	ब	४५
७५ ॥	भक्तों को दर्शन दे गयी रे	भ	४६
७६ ॥	भज् मन् राम् चरण् सुखदाइ	भ	४७
७७ ॥	भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना	भ	४७
७८ ॥	भजता क्यों नहि रे मन	भ	४८
७९ ॥	माँ वेदों ने जो तेरी महीमा कही है	म	४८
८० ॥	माँगा है मैने श्याम से	म	४९
८१ ॥	मेरे मन मे है राम मेरे तन मे हैं राम	म	४९
८२ ॥	मंगल मूरति मारुति नंदन	म	५०
८३ ॥	मंगल मूरती राम दुलारे	म	५०
८४ ॥	मीठे रस से भरी राधा रानी	म	५१
८५ ॥	मुकुंद माधव गोविंद बोल	म	५१
८६ ॥	मेरे रामजी उतरेंगे पार	म	५२
८७ ॥	मैली चादर ओढ़ के कैसे	म	५२
८८ ॥	मै शरण तुम्हारी आया हुँ	म	५३
८९ ॥	मुझे अपनी शरण में ले लो राम	म	५३
९० ॥	यशोमती मैया से बोले	य	५४
९१ ॥	राम नाम के हीरे मोती	र	५४
९२ ॥	राम् से बड़ा राम् का नाम	र	५५
९३ ॥	राधा रमण कहो	र	५५
९४ ॥	श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन	र	५६
९५ ॥	श्री राधे गोविंदा मन भजल	र	५७
९६ ॥	राधे तेरे चरणों की	र	५८
९७ ॥	लंका में आग लगाये कपि	व	५८
९८ ॥	वीणा पुस्तक मंगल हस्ते	स	५९
९९ ॥	सबसे ऊँची प्रेम सगाई	स	५९

क्रम	भजन	अक्षर	पृष्ठ
१०० ॥	सीताराम कहिये	स	६०
१०१ ॥	सीता के राम राधा के श्याम	स	६०
१०२ ॥	सुन बरसाने वाली	स	६१
१०३ ॥	सुमिरन कर ले मेरे मना	स	६१
१०४ ॥	ॐ शिव परात्परा शिव	श	६२
१०५ ॥	शरण मे आये हैं हम तुम्हारी	श	६२
१०६ ॥	शक्ति के तीन रूप	श	६३
१०७ ॥	शंकर तेरी जटा मे	श	६३
१०८ ॥	श्याम रसिया मेरे मन बसिया	श	६४
१०९ ॥	श्याम तेरी बंसी पुकारे	श	६४
११० ॥	श्रवण कुमार गाथा	श्र	६५
१११ ॥	हरि भक्त उठो हरि नाम जपो	ह	६६
११२ ॥	हे बाँके बिहारी गिरिधारी	ह	६७
११३ ॥	हे नाथ अब तो ऐसी दया हो	ह	६८
११४ ॥	हे राम जग मे सचो तेरो नाम	ह	६८
११५ ॥	हे प्रभु आनन्द दाता	ह	६९
११६ ॥	हे शारदे माँ हे शारदे मा	ह	६९
११७ ॥	आरती कुञ्जविहारीकी	आरती	७०
११८ ॥	श्री कृष्ण -आरती	आरती	७१
११९ ॥	ॐ जय जगदीश हरे	आरती	७२
१२० ॥	आरती सत्य नारायण स्वामी	आरती	७३
१२१ ॥	ॐ जय शिव ओंकारा	आरती	७४
१२२ ॥	ॐ जय लक्ष्मी माता	आरती	७५
१२३ ॥	ॐ जय श्री राम हरे	आरती	७६
१२४ ॥	पुष्पाञ्जलि		७७
१२५ ॥	विनिता जी एक जीवन चरित्र		७८

॥ मंगला चरण ॥

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।

नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

यो ऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्ताम् । सञ्जीवयत्यखिल शक्तिधरः स्वधाम्ना ॥

अन्याश्च हस्त चरणौ श्रवण त्वगादीन् । प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम् ॥

तत्रैव गङ्गा यमुना त्रिवेणी गोदावरी सिन्धु सरस्वती च ।

सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतोदार कथा प्रसंगः ॥

यं शैवा समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्ति नो ।

बौद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवः कर्तेति नैय्यायिकाः ॥

अर्हन्नित्यथ जैन शासनरता कर्मेति मीमांसकाः ॥

सो ऽयं वो विदधातु वाँछित फलं त्रैलोक्य नाथो हरिः ॥

अधरं मधुरं वदनं मधुरं

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरं । हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं ॥१

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरं । चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं ॥२

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ । नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं ॥३

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरं । रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं ॥४

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं स्मरणं मधुरं । वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं ॥५

गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा । सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं ॥६

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरं । दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं ॥७

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा । दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं ॥८

अब सौंप दिया इस जीवन का

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारें हाथों में - २।

है जीत तुम्हारें हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में - २॥

मेरा निश्चय बस एक यही इक बार तुम्हे पाजाऊँ मैं।

अर्पण करदूँ दुनियाँ भरका सब प्यार तुम्हारे हाथों में - २॥ अब सौंप दिया--

जो जगमे रहुँ तो ऐसे रहुँ ज्यों जलमे कमल का फूल रहे।

मेरे सब गुण दोष समर्पित हों करतार तुम्हँरे हाथों में - २॥ अब सौंप दियां

यदि मानव का मुझे जन्म मिले तो प्रभु चरणों का पुजारी बनुँ।

इस पूजक की इक इक रग का हो तार तुम्हारें हाथों में - २॥ अब सौंप दिया-

जब जब संसार का कैदी बनुँ निस्काम भाव से कर्म करूँ।

फिर अन्त समय में प्राण तजूँ निराकार तुम्हारे हाथों में - २॥ अब सौंप दिया--

मुझ में तुझ में बस भेद यही मैं नर हुँ तुम नारायण हो ॥

मैं हुँ संसार के हाथों मे संसार तुम्हारे हाथों में - २॥ अब सौंप दिया

अनुपम माधुरी जोडी

अनुपम माधुरी जोडी हमारे श्याम सुन्दर की

रसीली रसभरी आँखें हमारे श्याम सुन्दर की ।

कटीली भौं अदा उनकी सुघर सूरत मधुर बातें । लटक गंदन की मन वसिया हमारे श्याम सुन्दर की॥

अनुपम माधुरी जोडी--

मुकुट और चन्द्रिका माथे अधर पर पान की लाली। अहो कैसी भली गछवि है ।

हमारे श्याम सुन्दर की ॥ अनुपम माधुरी जोडी --

परस्पर मिलके जब विहरे श्री वृन्दावन के कुन्जों मे । नही बर्णत बनै शोभा । हमारे श्याम सुन्दर

की ॥ अनुपम माधुरी जोडी --

अगोचर शक्ती

सदा हरि भक्त कहते है सदा गुण गान गाते है।

अगोचर शक्ती अनुपम है न जिस को जान पाते है॥

न कोइ रंग शाला है न कोइ तूलिका दिखती।

न जाने मोर पंखो मे कहाँ से रंग आते है॥ १ ॥ अगोचर-

न कोइ सुग्य बैठा है वहापर शास्त्र ज्यामिति का।

अनोखी पंति दाडिम मे कहो कैसे रचता है॥ २ ॥ अगोचर-

न कोइ कर्म शाला है न कोइ यन्त्र है भीतर।

अहर्निश हृदय घटिका को प्रभु कैसे चलातें है॥ ३ ॥ अगोचर-

जहाँ है पंक मट मैला चतुर्दिक नीर कायि का।

न जाने स्वच्छ पंकज को प्रभु कैसे खिलाते है॥ ४ ॥ अगोचर-

न विदुत केन्द्र है कोइ न खम्बे तार कुछ भी हैं।

न जाने चाँद सूरज मे कहा से तेज आता है॥ ५ ॥ अगोचर-

आयेगा जबरे बुलावा

आयेगा जब रे बुलावा हरी का छोड़ के सब कुछ जान पड़ेगा

नाम हरी का साथ जायेगा और तु कुछ ना ले पायेगा ॥ आयेगा जब रे

राग द्वेश मे हरी बिसरायो । भूल के निज को जनम गवायो॥ १ आयेगा जबरे

सुमिरन हरी की साची कमाई । झूटी जग की सब है कमाई॥ २ आयेगा जबरे बुलावा...

अरज़ी कर तू हरी से ऐसी । भक्ती मिले मीरा की जैसी॥ ३ आयेगा जबरे बुलावा...

हाथ तेरे जीवन की बाज़ी । भक्ती से कर तू हरी को राज़ी॥४ आयेगा जबरे बुलावा...

अमर आत्मा

अमर आत्मा सच्चिदानन्द मै हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

१॥ अखिल विश्व का जो परमात्मा है सभी प्राणियों की वही आत्मा है ।

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

२॥ जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलाये गलाये न पानी न मृत्यु मिटाये ।

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

३॥ अजर और अमर जिसको वेदों ने गाया वही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया ।

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

४॥ अमर आत्मा है मरणशील काया सभी प्राणियों के जो भीतर समाया ।

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

५॥ है तारों सितारों मे प्रकाश जिस का है सूरज व चंदा में आभास जिसका ।

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

६॥ जो व्यापक है कणकण में है वास जिसका नही तीन कालों में भी नाश जिसका ।

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

जिन्हों ने तैरना सीखा वही बस पार होते हैं

अनाडी मोह सागर मे नही उस पार होते हैं

इतनी शक्ति हमें देना दाता

इतनी शक्ति हमें देना दाता मनका विश्वास कमज़ोर हो ना ।

हम चलें नेक रास्ते पे हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना ॥ हम चले ॥

हर तरफ झुल्म है बेबसी है सहमा-सहमा-सा हर आदमी है

पाप का बोझ बढ़ता ही जाये जाने कैसे ये धरती थमी है

बोझ ममता का तू ये उठा ले तेरी रचना का ये अन्त हो ना ॥ । हम चले ॥

दूर अज्ञान के हो अन्धेरे तूँ हमें ज्ञान की रौशनी दे ।

हर बुराई से बच के रहें हम जितनी भी दे भली ज़िन्दगी दे ।

बैर हो ना किसी का किसीसे भावना मन में बदले की हो ना ॥ हम चले ॥

हम न सोचें हमें क्या मिला है हम ये सोचें किया क्या है अर्पण ।

फूल खुशियों के बाटें सभी को सबका जीवन ही बन जाये मधुबन् ।

अपनी करुणा को जब् तू बहा दे करदे पावन हर इक मन का कोना ॥ हम चले ॥

हम अन्धेरे में हैं रौशनी दे खो ना दे खुद को ही दुश्मनी से

हम सज़ा पाये अपने किये की मौत भी हो तो सह ले खुशी से

कल जो गुज़रा है फिरसे ना गुज़रे आनेवाला वो कल ऐसा हो ना ॥ ।

हम चले नेक रास्ते पे हमसे भुलकर भी कोई भूल हो ना ॥ ।

इतनी शक्ति हमें दे ना दाता मनका विश्वास कमज़ोर हो ना ॥ ।

॥ उठ जाग मुसाफिर भोर भई ॥

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत हैं

जो सोवत है सो खोवत हैं जो जागत है सो पावत हैं ॥

तुक निंद से अखियाँ खोल जरा और अपने प्रभु का ध्यान लगा ।

यह प्रीति-करन की रीति नही प्रभु जागत हैं तुँ सोवत हैं। १ उठ जाग मुसाफिर ...

जो कल करना हैं आज करले । जो आज करना वो अब करले ।

जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया । फिर पछताये क्या होवत हैं ॥ २ उठ जाग मुसाफिर ...

नादान भुगत अपनी करनी । ओ पापी पाप मे चैंन कहाँ ।

जब पाप की गठरी शीश धरी । फिर शीश पाकड क्यों रोवत हैं ॥ ३ उठ जाग मुसाफिर ...

॥ उद्धार करो भगवान ॥

उद्धार करो भगवान तुम्हरी शरण पड़े। भव पार करो भगवान तुम्हरी शरण पड़े॥

कैसे तेरा नाम धियायें कैसे तुम्हरी लगन लगाये।

हृदय जगा दो ज्ञान तुम्हरी शरण पड़े॥ उद्धार करो भगवान ...

पंच मतों की सुन सुन बातें द्वार तेरे तक पहुंच न पाते।

भटके बीच जहाँ तुम्हरी शरण पड़े॥ उद्धार करो भगवान ...

तूँ ही श्यामल कृष्ण मुरारी राम तूँ ही गणपति त्रिपुरारी।

तुम्ही बने हनुमान तुम्हरी शरण पड़े ॥ उद्धार करो भगवान ...

ऐसी अन्तर ज्योति जगाना हम दीनों को शरण लगाना।

हे प्रभु दया निधान तुम्हरी शरण पड़े॥ उद्धार करो भगवान ...

ॐ है जीवन हमारा ॐ प्राणाधार है

ॐ है जीवन हमारा ॐ प्राणाधार है । ॐ है कर्ता विधाता ॐ पालन हार है।

ॐ है दुख का विनाशक ॐ सर्वानन्द है । ॐ है बल तेज धारी ॐ करुणा कन्द है।

ॐ सब का पूज्य है हम ॐ का पूजन करें । ॐ के ही ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।

ॐ के गुरु मन्त्र जप से ही रहेगा शुद्ध मन। बुद्धि दिन प्रति दिन बढ़ेगी धर्म मे होगी लगन।

ॐ के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायगा। अन्त मे यह ॐ हमको मुक्ति तक पहुँचायगा।

॥ॐ नमः शिवाय मंगलम् ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः शिवाय मंगलम् । ॐ मंगलम् ॐकार मंगलम् २। ॐकार रूप नाद हरये मंगलम् ।२ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः शिवाय मंगलम् ।

न मंगलम् नकार मंगलम् २ । नाद विन्दु कलातीत हरये मंगलम् । २

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः शिवाय मंगलम् ।

म मंगलम् मकार मंगलम् २ । महावाक्य लक्ष नाद हरये मंगलम् । २

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः शिवाय मंगलम् ।

शि मंगलम् शिकार मंगलम् २ । सिद्ध बुद्ध रूप नाद हरये मंगलम् । २

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः शिवाय मंगलम् ।

व मंगलम् वकार मंगलम् २ । वाद भेद दूर नाद हरये मंगलम् । २

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः शिवाय मंगलम् ।

यः मंगलम् यकार मंगलम् २ । यज्ञ रूप सर्व रूप हरये मंगलम् । २

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः शिवाय मंगलम् ।

॥ ऐ मालिक तेरे बंदे हम ॥

ऐ मालिक तेरे बंदे हम । ऐसे हो हमारे करम ।

नेकी पर चलें और बदी से टलें । ताकि हंसते हुये निकले दम ॥ ऐ मालिक

जब ज़ुल्मों का हो सामना । तब तूँ ही हमें थामना ।

वो बुराई करें हम भलाई भरें । नहीं बदले की हो कामना ।

बढ़ उठे प्यार का हर कदम । और मिटे बैर का ये भरम । नेकी पर चलें ॥ १ ॥

ये अंधेरा घना छा रहा । तेरा इन्सान घबरा रहा ।

हो रहा बेखबर । कुछ न आता नज़र । सुख का सूरज छिपा जा रहा

है तेरी रोशनी में वो दम । जो अमावस को कर दे पूनम । नेकी पर चलें ॥२॥

बड़ा कमज़ोर है आदमी । अभी लाखों हैं इसमें कमीं ।

पर तूँ जो खड़ा है दयालू बड़ा । तेरी कृपा से धरती थमी ।

दिया तूने जो हमको जनम । तू ही झेलेगा हम सबके गम । नेकी पर चलें ॥३

ऐसी लागी लगन

ऐसी लागी लगन मीरा हो गै मगन । वो तो गली गली हरी गुन गाने लगी ॥

मेहलों में पली बन के जोगन चली । मीरा रानी दीवानी कहाने लगी ॥ ऐसी लागि लगन ...

कोइ रोके नही कोइ टोके नही । मीर गोविन्द गोपाल गाने लगी ॥

बैठी संतों के संग रंगि मोहन के रंग । मीरा प्रेमि प्रीतम को बुलाने लगी ।

वो तो गली गली हरी गुण गाने लगी ॥ ऐसी लागि लगन ...

राणा ने विष दिया मानो अमृत पिया । मीरा सागर में सरिता समाने लगी ॥

दुःख लाखों सहे मुख से गोविन्द कहे । मीरा प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी ।

वो तो गली गली हरी गुन गाने लगी ॥ ऐसी लागि लगन ...

ऐसा प्यार बहा दे मैया

ऐसा प्यार बहादे मैया चरणों मे लग जाऊ मै ।

सब अंधकार मिटादें मैयां दरश तेरा कर पाऊँ मैं ॥ ऐसा प्यार ...

जग मे आकर जग को मैया अब तक ना पहचान सका।

क्यों आया हूँ कहाँ हैं जाना ये भी ना मैं जान सका।

तुम हो अगम अगोचर मैया कहो कैसे लख पाऊ मैं ॥ ऐसा प्यार ...

कर कृपा जगदंब भवानी मै बालक नादान हूँ।

नहीं आराधन जप तप जानू मैं अवगुण की खान हूँ।

दे ऐसा वरदान हे मैया सुमिरन तेरा गाऊ मैं ॥ ऐसा प्यार ...

मै बालक तू मैया मेरी निसदिन तेरी ओट है।

तेरी कृपा ही में तेरे भीतर जो भी खोट है।

अपनी शरण लगा लो मैया तुझपर बलि बलि जाऊँ मै ॥ ऐसा प्यार ...

॥ कभी राम बनके कभी श्याम बनके ॥

कभी राम बनके कभी श्याम बनके चले आना प्रभुजी चले आना ।

तुम राम रूप मे आना । सीता साथ ले के धनुश हाथ लेके चले आना प्रभुजी चले आना। कभी राम

तुम् श्याम रूप मे आना । राधा साथ ले के मुरली हाथ ले के चले आना प्रभुजी चले आना। कभी

तुम शिव के रूप मे आना । गौरा साथ ले के डमरू हाथ ले के चले आना प्रभुजी चले आना। कभी

तुम विष्णु रूप मे आना । लक्ष्मी साथ ले के चक्र हाथ ले के चले आना प्रभुजी चले आना। कभी

तुम गणपति रूप मे आना । रिद्धी साथ ले के सिद्धी साथ ले के चले आना प्रभुजी चले आना। कभी

किस देवता ने

किस देवता ने आज मेरा दिल चुरा लिया । दुनियाँ की खवर ना रही । तन को भुलादिया ॥

रहता था पास मै सदा लेकनि छुपा हुआ । कर के दया दयाल ने पर्दा उठा दिया । किस-

सूरज न था न चाँद था बिजली न थी वहाँ । इक ब्रह्म अजब शान था । जलवाँ दिखा दिया

किस देवता ने आज मेरा दिल चुरा लिया ॥

कोई कहे गोविन्द कोई गोपाला

कोई कहे गोविन्द कोई गोपाला मै तो कहू साँवरिया बाँसुरी वाला ।

गोविन्दा गोपाला

राधा ने श्याम कहा मीरा ने गिरिधर । कृष्णा ने कृष्ण कहा कुब्जा ने नटवर ।

ग्वालो ने पुकारा कह कर के ग्वाला ॥ मैं तो कहु ...

मैया तो कहती थी तुमको कन्हैया । घनश्याम कहते थे बलराम भैया ।

सूर की आंखो के तुम थे उन्जाला मैं तो कहु ...

भीष्म के बनवारी अर्जुन के मोहन । छलिया जो कहकर बुलाया दुर्योधन

कंसा तो कहत था जल कर के काला । मैं तो कहु ...

अच्युत युधिष्ठर के उधो के माधव । भगतो के भगवान सन्तो के केशव

मानो सब भजते हैं कह कर कृपाला । मैं तो कहु ...

कृष्ण गोविंद् गोपाल गाते चलो।

कृष्ण गोविंद् गोपाल गाते चलो। मन् को विषयों के विष् से हटाते चलो॥

देखना इंद्रियों के न घोड़े भगें । रात् दिन् इनको संयम के कोड़े लगें।

अपने रथ् को सुपथ पे चलाते चलो । मन् को विषयों के विष् से हटाते चलो॥ १

प्राण जाये मगर् नाम भूलो नहीं । दुख में तड़पो नहीं सुख् में फूलो नहीं

नाम धन का खज़ाना बढ़ाते चलो । मन् को विषयों के विष् से हटाते चलो॥ २

नाम जपते रहो काम करते रहो । पाप की वासनं से डरते रहो

प्रेम भक्ति के आँसू बहाते चलो । मन् को विषयों के विष् से हटाते चलो॥ ३

ख्याल आयेगा उसको कभी न कभी । भक्त पायेगा उसको कभी न कभी

ऐसा विश्वास् मन् में जगाते चलो । मन् को विषयों के विष् से हटाते चलो॥ ४

कृष्ण जिन का नाम है

कृष्ण जिनका नाम है गोकुल जिनका धाम है। x2

ऐसे श्री भगवान को बारम्बार प्रणाम है॥ x2

यशोदा जिनकी मैया है नन्दजु बापैया है।

ऐसे श्री गोपाल को बारम्बार प्रणाम है॥ x2

लूट लूट दधी माखन खायो ग्वाल बाल संग धेनु चरायो।

ऐसे लीलाधाम को बारम्बार प्रणाम है। x2

द्रुपद सुता की लाज बचायो । ग्राह से गजको फन्द छुढायो।

ऐसे कृपाधाम को बारम्बार प्रणाम है॥ x2

॥श्री कृष्ण शरणम मम ॥

श्री कृष्ण शरणम मम ये मन्त्र सदा जपते जाना

आया जब तू इस भूतल पर सफल जनम करते जाना ॥

१ - नर तन है अनमोल खजाना काम क्रोध से दूर रहे ।

जीवन की हर धढकन मे सत सेवा का संकल्प रहे ।

आया जब तू इस भूतल पर सफल जनम करते जाना ॥

२ - धन यौवन का नही ठिकाना ये मन मे विश्वास रहे ।

भूखे को भोजन करवाना जीवन का संकल्प रहे ।

आया जब तू इस भूतल पर सफल जनम करते जाना ॥

३ - गुरु गोविन्द के चरण कमल पर मान रहित ये शीश रहे ।

हँस सरीखी वृत्ति से चुन मोती मोती मस्त रहे ।

आया जब तू इस भूतल पर सफल जनम करते जाना ॥

कृष्ण कृष्ण बोल रे मना

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण बोल रे मना । राम राम राम राम बोल रे मना ।

जय गणेश श्री गणेश बोल रे मना । सुब्रहमण्यम सुब्रहमण्यम बोल रे मना ॥

१ नारायण नारायण बोल रे मना । लक्ष्मी नारायण नारायण बोल रे मना ॥ कृष्ण --

२ जय शिव शंकर जय शिव शंकर बोल रे मना। जै भवानी जै माँ दुर्गे बोल रे मना ॥ कृष्ण--

३ जय जय हनुमत जय जय हनुमत बोल रे मना । बीर बीर माहाबीर बोल रे मना । कृष्ण --

४ जय जय साँइ जय जय साँइ बोल रे मना । जय जय नानक जय जय नानक बोल रे मना कृष्ण --

५ ॐ ॐ हरि ॐ बोल रे मना जय जय सद्गुरु जय जय सद्गुरु बोल रे माना कृष्ण --

कैलाश के निवासी

कैलाश के निवासी तुम्हे बार बार मैं । कोटि नमन सत् प्रणाम तार तू हमें ॥

भक्तों को कभी नाथ ने निराश ना किया । मागा जिन्हे जो चाहा वरदान दे दिया ॥

दैत्य देव भूत प्रेत सब तुझे नमे । कोटि नमन सत् प्रणाम तार तू हमें ॥

क्या क्या नही दिया हम क्या प्रमाण दें । तीन लोक बसगये हरि तेरे दान से ॥

जहर पिया जीवन दिया इस नीलकण्ठ ने । कोटि नमन सत् प्रणाम तार तू हमें ॥

बखान क्या करें हम राखों के ढेर का । रहता भभूत मे है खजाना कुबेर का ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधियाँ तेरे पास मे । कोटि नमन सत् प्रणाम तार तू हमें ॥

तेरी कृपा बिन न हिले एक भी अणु । लेते हैं स्वाँस तेरी दया से तनु तनु ॥

सत चित आनन्द मिलें ॐ कार मे। कोटि नमन सत् प्रणाम तार तू हमें ॥

कौन कहता है भगवान आते नही

कौन कहता है भगवान आते नही । द्रौपदी की तरह तुम बुलाते नही ॥

कौन कहता है भगवान खाते नही । सबरी की तरह तुम खिलाते नही ॥

कौन कहता है भगवन बचाते नही । भक्त प्रहलाद सी निष्ठा लाते नही ॥

कौन कहता है भक्तों की सुनते नही । ध्रुव गज की तरह भक्ती करते नही ॥

कौन कहता है अन्तर मे आते नही । भक्त सब मिल के गुणगान गाते नही ।

प्रेम भक्ती से उन को रिझाते नही । श्रधा सेवा का आसन बिछाते नही ।

सच्चे तन मन से मन्दिर बनाते नही ॥ कौन कहता है ---

गाइये गणपति जग वन्दन

गाइये गणपति जग वन्दन । शंकर सुवन भवानी के नन्दन ।

सिद्धि-सदन गज-बदन बिनायक। कृपा-सिन्धु सुन्दर सब-लायक ॥१॥ गाइये गणपति जग

मोदक-प्रिय मुद-मंगल-दाता। बिद्या-बारिधि बुद्धि-बिधाता ॥२॥ गाइये गणपति जग वन्दन

मागत तुलसिदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥३॥ गाइये गणपति जग वन्दन

गुंजे सदा जयकार

गुंजे सदा जयकार हो भोले तेरे भवन मे ।

बेल पत्र और गंगा जल से । भक्ती भाव से पूजा करले तारेंगे भव से पार हो चलो शिव के शरण मे । गुंजे सदा जयकार

शिव का ध्यान करे मन निर्मल । शिव भक्ती है पुण्यों का फ़ल ।

करते है भोले निवास हो अपने भक्तों के मन मे । गुंजे सदा जयकार-

संकट से शिव सदा उबारे । दरशन देकर भाग्य सवारे ।

भोले कि महिमा अपार हो। हम गायें सब मिलके ॥ गुंजे सदा जयकार

गोविन्द हरि गोपाल हरि

गोविन्द हरि गोपाल हरि । जय जय प्रभु दीन दयाल हरि ।

१- हम जान गये पहचान गये । छबि आयी नजर तो मान गये ॥ हमरा भी सुनो अब हाल हरि .

२- राधाने तुम्हे आराधा था । अर्जुन ने प्रेम से बाँधा था । भक्तों के हो प्रतिपाल हरि .जय जय

३ आलस के पर्दे फटजावें । दुख दूर हो संकट कट जावें । दुखियों के हो सुखकार हरि .जय जय

४ जो निस्कपटी निस्कामी है । जो मन अपने का स्वामी है । उसको मिलते तत्काल हरि .जय

५ जो सर्ब प्रिय हितकारी है । पितु मातु का आज्ञाकारी है । उस भक्त के तुम नित साथ हरि .जय

गोविन्द मेरो है

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है , श्री बाँके बिहारी नंदलाल मेरो है ॥

मुरली बजैया ने मुरली बजाई , आवाज यह सब के कानों में आयी। गोविन्द मेरो है.....

उंगली पे जब गोवर्धन उठाया, वृज वासियों ने खुशी से है गाया। गोविन्द मेरो है.....

वीणा से नारदजी डमरू से शंकर, गाते हैं ये शब्द मस्ती मे आकर। गोविन्द मेरो है.....

गोविन्द लीन्हो मोल

पलक पर सोवत कामिनी रे । ज्ञान ध्यान सब पीसन लग्यो

पल मे लग गयी पलकन मोरी । मीचत ही पल मे पिया आयो

मै जो उठी आदर देने । जाग पड़ी पिया हाथ ना आयो

और सखी पिया सोकर खोया । मै अपना पिया जाग गोवायो

मैने लीनो गोविन्द मोल माईरि मैने लीनो गोविन्द मोल ।

कोई कहे सस्ता कोई कहे महंगा । मैने लीनो तराजू तोल माईरी मैने ।

मैने लीनो गोविन्द मोल माईरि मैने लीनो गोविन्द मोल

कोई कहे चोरी कोई कहे सानी । मैने लीनो बजंता ढोल माईरी मैने लीनो बजन्ता ढोल ।

कोई कहे गोरा कोई कहे काला । मैने लीनो अमोलक मोल माईरी मैने लीनो अमोलक मोल

मीरा के प्रभू गिरिधर नागर । ये तो आवत प्रभु प्रेम के मोल माईरी मैने लीनो गोविन्द मोल

मैने लीनो गोविन्द मोल माईरि मैने लीनो गोविन्द मोल

मैने लीनो तराजू तोल । मैने लीनो बजंता ढोल । मैने लीनो अमोलक मोल

घूंघट के पट् खोल

घूंघट के पट खोल रे तोहे पियाँ मिलेंगे । घूंघट के पट खोल रे ॥

घट घट में तोरे साइं बसत हैं कटु वचन मत बोल रे तोहे पियाँ मिलेंगे।

घूंघट के पट खोल रे तोहे पियाँ मिलेंगे ।

धन जोबन का गर्व न कीजै । झूठा इनका मोल रे तोहे पियाँ मिलेंगे। घूंघट के पट खोल रे।

जाग जतन से रंग महल में । पियाँ पायो अनमोल रे। घूंघट के पट खोल रे।

सूने मन्दिर दिया जलाके । आसन से मत डोल रे तोहे पियाँ मिलेंगे। घूंघट के पट खोल रे।

चलो मन गंगा जमुना तीर

चलो मन गंगा जमुना तीर ।

गंगा जमुना निरमल पानी । शीतल होत शरीर। चलो मन गंगा जमुना तीर ॥

बंसी बजावत गावत कांन्हा , संग लियो बलवीर। चलो मन गंगा जमुना तीर ॥

मोर मुकुट पीतांबर सोहे , कुंडल झल्कत हीर। चलो मन गंगा जमुना तीर ॥

मीरा के प्रभू गिरिधर नागर , चरण कमल पर सीर। चलो मन गंगा जमुना तीर ॥

चोरी माखन की

चोरी माखन की तू छोड कन्हैया मै समझाउ तोय

मैं समझाउँ तोय साँवरे मै समझाउँ तोय ।अरे माँखन की

१- नौलख धेनु नन्द बाबा के नित नयाँ माखन होय ।

नन्द बाबा को बढो धरानो हँसी हमारी होय ॥ अरे माँखन

२ - बरसाने से आइ संगाई घर घर चर्चा होय ।

बडे धरो की राज दुलारी नाम धरेगी तोय ॥ अरे माँखन की

३ या चोरी ना छूटे मैय्या होनी हो सो होय ।

सूरदास मैया के आगे दिये नैन भर रोय ॥ अरे माँखन की

छुम छुम बाजे पायलिया

छुम छुम बाजे पायलिया छवि दिखलाये कन्हा मेरे घर आये प्यारे मेरे घर आये ।

१ - रैन अन्धेरी चन्द्र स्वरूपी आगये आगये । माता यशोदा और सखियों को भा गये भा गये

कान्धे काली कम्बलिया मुख मलकाये कान्हा । नयन नचाते आये मेरे घर आये ।

२ - सुनकर बंसी सखियाँ सुध बुध खोगयी खोगयी । दर्शन करके हम तो पावन हो गये हो गये ।

ऐसे प्यारे साँवरिया भाग्य जगाने आये । मेरे घर आये कान्हा मेरे घर आये ॥

छुम छुम बाजे पायलिया छवि दिखलाये कान्हा मेरे घर आये प्यारे मेरे घर आये ।

छोटी छोटी गईया

छोटी छोटी गईया छोटे छोटे ग्वाल । छोटो सो मेरो मदन गोपाल ॥

आगे आगे गइया पीछे पीछे ग्वाल । बीच में मेरो मदन गोपाल ॥ छोटी छोटी गईया -

कारी कारी गइया गोरे गोरे ग्वाल । श्याम वरण मेरो मदन गोपाल ॥ छोटी छोटी गईया -

धास खावें गइया दूध पीवें ग्वाल । माखन खावें मेरो मदन गोपाल ॥ छोटी छोटी गईया -

छोटी छोटी लकुटी छोटे छोटे हाथ । बंसी बजावें मेरो मदन गोपाल ॥ छोटी छोटी गईया -

छोटी छोटी सखियां मधुबन बाग ।रास रचावें मेरो मदन गोपाल ॥ छोटी छोटी गईया .

जय जय गणपति

जय जय गणपति जय जय गणेश । सिद्धि विनायक जय करुणेश ॥

पुजा होती प्रथम तुम्हारी । देव दनुज सब तुम से हारी ।

जयति गजानन जय करुणेश जय जय मंगल मूर्ति गणेश ॥

लाभ और शुभ के तुम हो दाता । तुम हो विद्या बुद्धि विधाता ।

निर्मल बुद्धि करो अखिलेश । जय जय मंगल मूर्ति गणेश ॥

ऋद्धि सिद्धि के तुम हो स्वामी देव नमामि नमामि नमामि

सब के विघ्न हरो बिघ्नेश जय जय मंगल । जय जय मंगल मूर्ति गणेश ॥

जय गणेश जय गणेश...

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा। माता जा की पारवती पिता महादेवा॥

लड्डूओं का भोग लगे सन्त करे सेवा । जय गणेश देवा -

एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी। माथे पर तिलक सोहे मूसे की सवारी ।

दीनो के दुख हरत परमानन्द देवा । जय गणेश देवा

अंधन को आँख् देत कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया

भव से पार करो नाथ भजन करे तेरा । जय गणेश देवा

जो तेरा ध्यान धरे ज्ञान मिले उस को । छोड तुम को और भला ध्याउँ मै किस को । हे देवा कृपा करो कष्ट हरो मेरा जय गणेश देवा ॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा। माता जा की पारवती पिता महादेवा ॥

॥जग में सुन्दर हैं दो नाम॥

जग में सुन्दर हैं दो नाम चाहे कृष्ण कहो या राम । बोलो राम राम राम बोलो श्याम श्याम श्याम ।

माखन बृज में एक चुरावे एक बेर भिलनी के खावे । प्रेम भाव से भरे अनोंखें दोनो के है काम ।

चाहे कृष्ण कहो या राम । बोलो राम राम राम बोलो श्याम श्याम श्याम ॥

एक कंस पापी को मारे एक दुष्ट रावन संहारे । दोनों दीन के दुख हरत है दोनों बल के धाम ।

चाहे कृष्ण कहो या राम । बोलो राम राम राम बोलो श्याम श्याम श्याम

एक राधिका के संग राजे । एक जानकी के संग बिराजे । चाहे सिता राम कहो या बोलो राधे श्याम

चाहे कृष्ण कहो या राम । बोलो राम राम राम बोलो श्याम श्याम श्याम ॥ जग में सुन्दर -

॥ जय गोविंदा गोपाला ॥

जय गोविंदा गोपाला मन मोहन श्याम कन्हैया ॥ मुरली धर गोपाला घनश्याम नन्दके लाला।

जग पालक तू रास रचैया गोवर्धन गिरिधारी। कितने नाम तेरे नटवर तू साँवल कृष्ण मुरारी ।

मोर मुकुट मनहर लेवत बलिहारि हर बृज बाला। मुरली धर गोपाला घनश्याम नंदके लाला।

तूही सागर में रमता तूही धरती पाताल। जलमे नभमे और जगतमे तेरी जय जयकार ।

मेरे मन मंदिर मे स्वामी तुझसे ही उजियाला । मुरली धर गोपाला घनश्याम नन्दके लाला।

जिसका कोई नही इस जगमे उसका मीत कन्हैया। बंसि बजैया रास रचैया काली नाग नथैया।

राजा हो या दीन भिखारी सबका तू रखवाला। मुरली धर गोपाला घनश्याम नन्दके लाला।

जनम तेरा बातों ही बीत गयो

जनम तेरा बातों ही बीत गयो रे तूने कबहु ना कृष्ण कह्यो ।

पांच बरस का भोला भाला अब तो बीस भयों ।

मकर पचीसी माया कारन देश विदेश गयो रे तूने

तीस बरस की अब मती उपजी तो लोभ बढे नित नयो ।

माया जोड़ी तूने लाख करोड़ी पर् अजहू न त्रिप्त भयो रे तूने कबहु ना कृष्ण कह्यो ।

वृद्ध भयो तब आलस उपजी कफ नित कण्ठ रह्यो ।

संगती कबहू ना नीका कीन्ही रे तेरो बिर्था जनम गयो रे तूने कबहु ना कृष्ण कह्यो ।

जनम तेरा बातों ही बीत गयो रे तूने कबहु ना कृष्ण कह्यो ॥

कहत कबीर समझ मन मूरख तू क्यूं भूल गयो रे तूने कबहु ना कृष्ण कह्यो

जनम तेरा बातों ही बीत गयो रे तूने कबहु ना कृष्ण कह्यो ॥

जिनके हृदय हरी नाम बसे

जिनके हृदय हरी नाम बसे तिन और का नाम लिया न लिया

जिनके द्वारे पर गंग बहे तिन कूप का नीर पिया न पिया ॥जिनके हृदय

जिन काम किया परमारथ का तिन हाथ से दान दिया न दिया ॥जिनके हृदय

जिन के घर एक सपूत बह्यों तिन लाख कपूत भया ना भया ॥जिनके हृदय

जिन मात पिता की सेवा करी तिन तीरथ व्रत किया न किया ॥जिनके हृदय

जिनके द्वारे पर गंग बहे । जिन काम किया परमारथ का

जिन के घर एक सपूत बह्यों । जिन मात पिता की सेवा करी

तुलसी दास विचार कहे कप्टी को मीत किया ना किया

जिनके हृदय हरी नाम बसे तिन और का नाम लिया ना लिया

जै जै नारायण नारायण हरि हरि

जै जै नारायण नारायण हरि हरि । स्वामी नारायण नारायण हरि हरि

लक्ष्मी नारायण नारायण हरि हरि ॥ सत्य नारायण हरि हरि

तेरी छवि है सुन्दर प्यारी प्यारी हरि हरि । हम आये शरण तिहारि हरि । हरि हरि

तेरी लीला सब से न्यारी न्यारी हरि हरि । तेरी महिमा प्रभु है प्यारी प्यारी हरि हरि ॥

१- अलख निरंजन भव भय भंजन जन मन रंजन दाता । हमे शरण दो अपनी चरण मे ।

कर निर्भय जगत्राता । तूने लाखो की नैय्या तारी तारी हरि हरि जै जै नारायण

२- हमने देखा तो यही लगा तेरे जग मे है प्रभु दगा ही दगा । मनमे सोचा बिन तेरे यहाँ पर कोइ न सगा कोइ न सगा । उसने लाखों की विपदा टारी टारी हरि हरि जै जै नारायण --

३- हरि नाम का पारस जो छू ले वो हो जाये सोना । दोअक्षर का शब्द हरि है लेकिन बडा सलोना । उसने संकट टाले भारी भारी हरि हरि । जै जै नारायण ---

॥ जय जय जय हनुमान गोसाई कृपा करो महाराज ॥

जय जय जय हनुमान गोसाई कृपा करो महाराज ॥

तन मे तुम्हरे शक्ति विराजे मन भक्ति से भीना । जो जन तुम्हरी शरण मे आये दुःख दरद हर लीना...हनुमत

महाबीर प्रभू हम दुःखियन के 2 तुम हो गरीब निवाज ...हनुमत तुम हो गरीब निवाज ...हनुमत

जय जय जय हनुमान गोसाई कृपा करो महाराज ॥

राम लखन वैदेही तुमपर सदा रहे हरशाये । हृदय चीर के सारे जग को राम सिया दरशाये ...हनुमत राम सिया

दोउ कर जोर अरज हनुमन्ता 2 कहियों प्रभु से आज ...हनुमत । कहियों प्रभु से आज ...हनुमत

जय जय जय हनुमान गोसाई कृपा करो महाराज ॥

राम भजन के तुम हो रसिया हनुमत मंगल कारी । अर्चन वन्दन करते तेरा 2 दुनिया के नर नारी ...हनुमत

राम नाम जप के हनुमन्ता 2 बने भक्तन सर्ताज ...हनुमत बने भक्तन सर्ताज । जय जय जय हनुमान गोसाई

जय श्री हनूमान जय श्री हनूमान

मंगल मूरत मारुती नन्दन सकल अमंगल मूल निकन्दन ।

पवन तनय सन्तन हितकारी हृदय विराजत अवध बीहारी ।

जय जय जय बजरंगबली । जय जय जय बजरंगबली । महाबीर हनुमान गोसाई 2 तुम्हरी याद भली

साधु सन्त के हनुमत प्यारे । भक्त हृदय श्री राम दुलारे ।

राम रसायन पास तुम्हारे सदा रहो तुम राम दुवारे । तुमरी कृपा से हनुमत बीरा 2 सगरी विपत्ति तरी

जय जय जय बजरंगबली ।

तुम्हरी शरण महा सुखदायी जय जय जय हनूमान गोसाई ।

तुम्हरी महीमा तुलसी गाई जगजननी सीता महामाई ।

शिव शक्ती की तुम्हरे हृदय ज्योत महान जली ॥ जय जय जय बजरंगबली

सीया राम चरनन मतवाले भक्तन की तू बात ना टाले

पाप अग्नि से सबको बचाले घिर आये दुःख बादल काले

बिन तेरे अब कौन बचावे 2 ऐसी आंधि चली ॥ जय जय जय बजरंगबली

॥जर्रे जर्रे मे है झाँकी भगवान की ॥

जर्रे जर्रे मे है झाँकी भगवान की। किसी सूझ वाली आँख ने पहचान ली ॥

नामदेव ने पकाइ रोटी कुत्ते ने उठाइ पीछे घी का कटोरा लिये जा रहे ।

बोले रुखी मत खाओ स्वामी घी तो लेते जाओ । रूप अपना क्यो मुझ से छुपारहे

तेरा मेरा एक रूप फिर काहेको हुज़ुर । तू ने शक्ल बनाइ है स्वान की

मुझे ओढनि ओढइ है इन्सान की ॥ १ ॥ जर्रे जर्रे मे हैं

निगाह मीरा की निराली । पी के ज़हर की प्याली । ऐसा गिरधर बसाया स्वाँस मे ॥

जब आया काला नाग । बोले धन्य मेरे भाग । प्रभु आये आज साँप के लिवास मे ॥

आओ कृष्ण कन्हाइ । जाउँ तुम पे बलिहारि । बडी कृपा है कृपा निधान की ।

बडी कृतग्य हुँ आप के अहसान की ॥ २ ॥ जर्रे जर्रे मे हैं

इसी तरह सूरदास निगाह जिन की थी खास । ऐसा नसा था साँवरे हरि नाम का ।

नैन हुये जब बन्द । तब आया वो आनन्द । आया नज़र निज़ारा घनश्याम का ।

हर जगह वह समाया । सारे जग को लखाया । आइ आँखो मे रोशनि ज्ञान की

देखी झूम झूम झलकियाँ जहान की ॥ ३ ॥ जर्रे जर्रे मे हैं

गुरू नानक कवीर । नही जग मे नज़ीर । पत्ते पत्ते मे देखा निरंकार को ।

नज़दीक और दूर वही हाज़रा हुज़ुर । यही सार समझाया संसार को ।

काशी झाँसी वृन्दावन । शहर गाँव हर जाहान मेहरवानी है उसी मेहरवान की

सारी चीजें हैं एक ही दुकान की ॥ ४ ॥ जर्रे जर्रे मे है झाँकी भगवान की

॥ ज्योत से ज्योत जगाते चलो ॥

॥ ज्योत से ज्योत जगाते चलो प्रेम की गंगा बहाते चलो ॥ २

राह में आ जो दीन दुखी सबको गले से लगाते चलो।

जिसका न कोई संगी साथी ईश्वर है रखवाला ।

जो निरधन है जो निरबल है वह है प्रभू का प्यारा ।

प्यार के मोती लुटाते चलो प्रेम की गंगा ... ज्योत से ज्योत जगाते चलो ...

आशा टूटी ममता रूठी छूट गया है किनारा ।

बंद करो मत द्वार दया का दे दो कुछ तो सहारा

दीप दया का जलाते चलो प्रेम की गंगा ... ज्योत से ज्योत जगाते चलो ..

छाई है छाओं और अंधेरा भटक गई हैं दिशाएं ।

मानव बन बैठा है दानव किसको व्यथा सुनाएं ।

धरती को स्वर्ग बनाते चलो प्रेम की गंगा ... ज्योत से ज्योत जगाते चलो ...

॥ डम डम डम डम डमरु ॥

डम डम डम डम डमरु बजाये शिव शंकर कैलाश पति ।

युग युग सोया जीव जगाये। शिव शंकर कैलाश पति ॥

ॐ नमः शिवाय (२) बोलो ॐ नमः शिवाय

माथे ऊपर तिलक चंद्रमा पहरे नाग के माला ।

डमरु की धड़कन पे नाचे सृष्टि का रखवाला ।

निज भक्तन के कष्ट मिटाये शिव शंकर कैलाश पति ।

युग युग सोया जीव जगाये शिव शंकर कैलाश पति ।

ॐ नमः शिवाय (२) बोलो ॐ नमः शिवाय

जटा जूट से झरती गंगा भवके ताप मिटाती ।

धरति और प्यासे जीवों की। मैया प्यास भुझाती

निज कृपा जग पे बरसाये शिव शंकर कैलाश पति ।

युग युग सोया जीव जगाये। शिव शंकर कैलाश पति ।

ॐ नमः शिवाय (२) बोलो ॐ नमः शिवाय

मंगल करी नाम है उनका वो है शक्ति दाता ।

भवसागर से तर जाये वों जो शिव नाम है गाता

मोह माया से मनको छुड़ाये शिव शंकर कैलाश पति ।

युग युग सोया जीव जगाये। शिव शंकर कैलाश पति ।

ॐ नमः शिवाय (२) बोलो ॐ नमः शिवाय

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार् उदासी मन् काहे को करे ॥

नैया तेरी राम् हवाले लहर् लहर् हरि आप् सम्हाले ।

हरि आप ही उठायें तेरा भार उदासी मन् काहे को करे ॥

काबू में मँझधार् उसी के हाथों में पतवार् उसी के ।

तेरी हार् भी नहीं है तेरी हार् उदासी मन् काहे को करे ॥

सहज किनारा मिल् जायेगा परम् सहारा मिल् जायेगा ।

डोरी सौंप् के तो देख् एक् बार् उदासी मन् काहे को करे ॥

तू निर्दोष् तुझे क्या डर् है पग् पग् पर् साथी ईश्वर् है।

सच्ची भावना से कर् ले पुकार् उदासी मन् काहे को करे ॥

तेरा रंग काला क्यूं

ज़रा इतना बतादे कान्हा तेरा रंग काला क्यूं । जरा इतना बतादे कान्हा
तेरा रंग काला क्यूं ॥ तू काला होकर भी जग से निराला क्यूं ।

मैंने काली रात को जनम लिया ॥ और कालि गाये का दूद पिया ।
मेरी कमली भी काली है इसलिये काला हूं । जरा इतना बतादे कान्हा --

सखी रोज हि घर मे बुलाती है । और माखन हमे खिलाति है ।
सखियों का दिल काला इसलिये काला हूं । जरा इतना बतादे कान्हा --

मैंने काली नाग पे नाच किया । और काली नाग को नाथ लिया ।
नागों का रंग काला इसलिये काला हूं । जरा इतना बतादे कान्हा --

सावन मे बिजली चमकती है । बादल भी बहुत बरसते हैं ।
बादल का रंग काला इसलिये काला हूं । जरा इतना बतादे कान्हा --

सखी नैनों मे कजरा लगाती हैं । अपनी आखों मे हमको बसाती है ।
कजरे का रंग काला इसलिये काला हूं । जरा इतना बतादे कान्हा --
तू काला होकर भी जग से निराला क्य

॥ तेरी बन जैहें गोबिन्द गुन गाये से ॥

तेरी बन जैहें गोबिन्द गुन गाये से राम गुन गाये से श्यम गुण गाये से ।

ध्रुव की बन गई प्रह्लाद की बन गई । द्रोपदी की बन गई चीर के बढ़ाये से। तेरी बन जैहें ...

बाली की बन गई सुग्रीव्क् की बन गई । हनुमत की बन गई सिया सुधी लाये से। तेरी बन जैहें ...

नंद की बन गई यशोदा की बन गई । गोंपियन की बन गई माखन खवाये से। तेरी बन जैहें ...

गज की बन गई गीध की बन गई । केवट की बन गई नाव पे चढाये से। तेरी बन जैहें ...

उद्धव की बन गई भीष्म की बन गई । अर्जुन की बन गई गीता ग्यान पाये से। तेरी बन जैहें ...

तुलसी की बन गई सूर की बन गई । मीरा की बन गई गोबिन्द के रिझाये से। तेरी बन जैहें ...

तेरे दर्शन से भगवान

तेरे दर्शन से भगवान हुआ मुझ को आनन्द महान ।

जिस ने तेरा ध्यान लगाया उसने मोक्ष पदारथ पाया ।

करलिया अत्मा का कल्याण। हुआ मुझ को आनन्द महान। १

मुझ को शान्ति छवि दिखलाई । भगवन यह मेरे मन भाई ।

तेरा दर्शन सुख की खान । हुआ मुझ को आनन्द महान । २

तुम हो दीनानाथ दयाल । करते हो करूणा प्रतिपाल ।

तुम्हारा है जग मे गुण गान । हुआ मुझ को आनन्द महान । ३

यह भक्त शरण मे आया । अंग फूला नही समाया

देख कर तेरी निराली शान । हुआ मुझ को आनन्द महान । ४

॥ तेरे पूजन को भगवान ॥

तेरे पूजन को भगवान बना मन मंदिर आलीशान ।

किसने जानी तेरी माया किसने भेद तिहारा पाया।

हारे ऋशी मुनी कर ध्यान बना मन ॥ १ तेरे पूजन को भगवान ...

तू ही जल मे तू ही थल मे तू ही मन मे तू ही वन मे ।

तेरा रूप अनूप महान बना मन ॥ २ तेरे पूजन को भगवान ...

तूने राजा रंक बनाये तूने भिक्षुक राज दिलाये ।

तेरी लीला ऐसी महान बना मन ॥ ३ तेरे पूजन को भगवान ...

तू हर गुल मे तू बुलबुल मे तू हर दाल के हर पातन मे ।

तू हर दिल मे मूरतिमान बना मन ॥ ४ तेरे पूजन को भगवान ...

झूठे जग की झूठी माया मूरख उसमे क्यों भरमाया ।

कर कुछ जीवन का कल्याण बना मन ॥ ५ तेरे पूजन को भगवान ...

तेरी मेहरवानी का

तेरी मेहरवानी का है बोझ इतना, कि मै तो चुकाने के काबिल नही हूँ।

मैं आ तो गया हूँ मगर जानता हूँ, तेरे दरपे आनेके क़ाविल नही हूँ॥

१ ॥ जमाने की चाहत ने हम को उठाया। तेरा नाम हरगिज़ जुवाँ पे न आया ॥

वफ़ादार तेरा गुनाह गार हूँ मैं। तुम्हे मुँह दिखाने के क़ाविल नही हूँ॥

२ ॥ ये माना कि दाता है तू हर जहाँ का। मगर झोली आगे फैलाउँ तो कैसे ॥

जो पहले दिया है वही कम नही है। मैं उसको निभाने के क़ाविल नही हूँ॥

३ ॥ तुम्ही ने अदा की मुझे ज़िन्दगानी। मगर तेरी महिमा नही मैंने जानी ॥

करज़दार इतना हुँ तेरी दया का। कि करज़ा चुकाने के क़ाविल नही हूँ॥

४ ॥ तमन्ना यही है कि शिर को झुका के। तेरे दर्श इक बार जी भर के करलूँ॥

सिवा आँसु बिन्दु कि ओ मेरे मालिक ।मैं कुछ भी चढ़ाने के काविल नही हूँ ॥

॥ तोरा मन दर्पन कहलाये ॥

तोरा मन दर्पन कहलाये , भले बुरे सारे करमों को देखे और दिखाये। तोरा मन दर्पन कहलाये

मन ही देवता मन ही ईश्वर मन से बड़ा ना कोय ।

मन उजियारा जब जब फैले जग उजियारा होय ।

इस उजले दर्पन पे प्राणी धूल न जमने पाये । तोरा मन दर्पन कहलाये ...

सुख की कलियाँ दुःख के काँटे मन सबका आधार ।

मन से कोई बात छुपे ना मन के नयन हज़ार

जग से चाहे भाग ले कोई मन से भाग न पाये । तोरा मन दर्पन कहलाये ...

तूँ प्यार का सागर है

तूँ प्यार का सागर है तेरी इक बूंद के प्यासे हम।

लौटा जो दिया तूने चले जायेंगे जहाँ से हम ॥

घायल मन का पागल पंछी उड़ने को बेकरार ।

पंख हैं कोमल आंख हैं धुन्धली जाना हैं सागर पार ... जाना हैं सागर पार

अब तूँ ही इसे समझा । राह भूले थे कहाँ से हम । तूँ प्यार का सागर है ...

इधर झूम के गाये जिन्दगी उधर हैं मौत खड़ी। कोई क्या जाने कहाँ हैं सीमा

उलझन आन पड़ी। कानों में ज़रा कह दे के आये कौन दिशा से हम ।

तूँ प्यार का सागर है ...

दरबार में बंशी वाले के। दुःख दर्द मिटाए जाते हैं॥

दरबार में बंशी वाले के दुःख दर्द मिटाए जाते हैं।

दुनिया के सताए लोग यहां सीने से लगाए जाते हैं॥

संसार नहीं है रहने को यहां दुःख ही दुःख है सहने को।

भर भर के पियाले अमृत के यहां रोज पिलाए जाते हैं॥ दरबार में बंशी वाले के

पल पल में आश निराश भई। दिन दिन घटती पल पल बढ़ती॥

दुनियां जिसको ठुकरा देती। वह गोद बिठाए जाते हैं॥ दरबार में बंशी वाले के

जो गोविन्द गोविन्द कहते हैं। वह प्रभु सुख में रहते हैं॥

उन्हीं को बुलाया जाता है। दरबार बुलाए जाते हैं॥दरबार में बंशी वाले के

सर रख कर तली पर आ जाओ। हसरत है जिन्हें कुछ पाने की॥

मेरे गोविन्द को पाने के लिए। कुछ कष्ठ उठाए जाते हैं॥दरबार में बंशी वाले के दुःख

॥ दर्शन दो घनश्याम नाथ ॥

दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अँखियाँ प्यासी रे॥

मंदिर मंदिर मूरत तेरी फिर भी न दीखे सूरत तेरी।

युग बीते ना आइ मिलन की पूरनमासी रे॥ १ ॥ दर्शन दो घनश्याम ॥

द्वार दया का जब तू खोले पंचम सुर में गूंगा बोले।

अंधा देखे लंगड़ा चल कर पँहुचे काशी रे॥ २ ॥ दर्शन दो घनश्याम ॥

पानी पी कर प्यास बुझाऊँ नैनन को कैसे समझाउँ।

आँख मिचौली छोड़ो अब तो घट घट वासी रे॥ ३ ॥ दर्शन दो घनश्याम ॥

॥ दया कर दान भक्ती का ॥

दया कर दान भक्ती का हमें परमात्मा देना।

दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना। दया कर ...

हमारे ध्यान में आओ प्रभु आखों में बस जाओ।

अन्धेरे दिल में आकर के परम ज्योति जगा देना। दया कर ...

बहा दो प्रेम कि गंगा दिलो में प्रेम का सागर।

हमें आपस में मिलझुल करप्रभु रहना सिखा देना। दया कर ...

हमारा कर्म हो सेवा हमारा धर्म हो सेवा।

सदा इमान हो सेवा सेवकचर बना देना। दया कर ...

तुम्हारे वासते जीना तुम्हारे वासते मर्ना।

तुम्ही पर सब फिदा करना प्रभु हमको सिखा देना। दया कर ...

दया कर दान भक्ती का हमें परमात्मा देना। दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।

दया कर दान भक्ती का हमें परमात्मा देना।

॥ दूर नगरी बड़ी दूर नगरी ॥

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी । कैसे आऊँ मैं तेरी गोकुल नगरी । दूर नगरी बड़ी दूर नगरी

रात को आऊँ कान्हा डर माही लागे । दिन को आऊँ तो देखे सारी नगरी। दूर नगरी॥

सखी संग आऊँ कान्हा शर्म मोहे लागे । अकेली आऊँ तो भूल जाऊँ डगरी। दूर नगरी॥

धीरे चलूं तो कमर मोरी लचके । झटपट चलूं तो छलकाए गगरी। दूर नगरी॥॥

मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर । तुमरे दरस बिन हो ग मैं बावरी। दूर नगरी॥॥

प्रसिद्ध दोहे

बड़े बड़ाई ना करे बड़े न बोले बोल। रहिमन हीरा कब कहे लाख टका मेरो मोल॥

जो बड़ीन को लघु कहे नहि रहीम घट जाई। गिरिधर मुरलीधर करे कछु दुख मान्त नाई॥

ज्ञानी से कहीये कहा कहत कबीर लजाए। अन्धे आगे नाचते कला अकारत जाए॥

ऐसी बानी बोलिये मन का आपा खोइ। औरन को शीतल करे आपहुँ शीतल होई॥

रात गवाई सोइ के दिवस गवायो खाए। हीरा जनम अमोल था कौड़ी बदले जाए॥

तुलसी भरोसे राम के निर्भय हो के सोए। अनहोनी होनी नही होनी हो सो होए ॥

मेरी भव बाधा हरो राधा नागर सोए। जातन की छाई परे च्याम हरित दुती होए॥

दुःख मे सुमिरन सब करे सुख मे करे न कोइ। जो सुख मे सुमिरन करे तो दुःख काहे को होइ॥

आवत ही हरशे नही नैनन नहि सनेह। तुलसी तहा ना जाईये चाहे कन्चन बरसे नैन॥

बुरा जो देखन मै चला बुरा न मिलया कोइ। जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न कोइ॥

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाए। टूटे से फिर ना जुड़े जुड़े गाथ पड़ जाए ॥

बिगड़ी बात बने नही लाख करो इन कोइ। रहिमन बिगड़े दूध को मथे न माखन होइ॥

माटी कहे कुम्हार से

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रोंधे मोहे । इक दिन ऐसा आयेगा मै रुंधूंगी तोय

आये है सो जायेंगे राजा रंक फकीर । एक सिंघासन चढि चले एक बन्धे ज़न्जीर

दुरबल को ना सताईये जाके मोती हाये । बिना जीव की हाये से लोहा भस्म हो जाये

चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय । दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय

हाड़ जले जु लाकड़ी केश जले जुं घास । सब जग जलता देख के भय कबीर उदास

कबीर खई तोतकी पानी पिबे ना कोय । जाये मिले जब गंग से तो ग ।गोदक होय

तुलसी तुलसी सब कहे तुलसी बन की घास । हो गई कृपा राम की तो बन गये तुलसी दास

सांच बराबर तप नही झूट बराबर पाप । जांके हिरदय सांच है तांके हृदय प्रभु आप

दुःख मे सुमिरन् सब करे सुख मे करे न को । जो सुख मे सुमिरन करे तो दुःक काहे को होये

रहिमन बड़न को देख कर लघु न दीजिये दार । जहां काम आये सुई क्या करे तलवार

रहिमन धागा प्रेम का नो तोड़ो किचकाये । टूटे से फिर ना जुड़े जुड़े तो गाथ पड़ जाये

ऐसी देनी देन ज्यू कित सीखे होसईन । ज्यो ज्यो कर उंच्यो कर्यों त्यो त्यो नीचे नयन

देनहार कोई और है भेजत जो दिन रैन । लोग भरम हम पर करे तसो नीचें नैन

तुलसी इस संसार मे सबसे मिलिये धाये । नाजाने किस रूप में नारायन मिल जाये

नारायण दीन दयाल रे

नारायण दीन दयाल रे भजमन राधे गोविंदा । नारायण तेरे अधार रे भजमन --

मायामें मन क्यां भरमाये साथ न तेरे कौड़ी जाये ।

जायेगा हाथ पसारे रे भजमन राधे ...

जीवनका कुछ नही ठिकाना चले न काल से कोई बहाना ।

कुछ तो सोच बिचार रे भजमन राधे ...

मनवाँ करले अब सत संगीत हो जायेगी तेरी शुभ गाते ।

बेड़ा लगेगा तेरा पार रे भजमन राधे ...

मात पिता और कुटुंब कबीला बाग बगीचा बाड़ी ।

ने बंगला कोई न आवे तेरे साथ रे भजमन राधे ...

नाम दिलसे न भूलो हरिका

नाम दिलसे न भूलो हरि का ये भुलाने के काबिल नही है ।

चोला अनमोल तुझको मिला है जिसमे जीवन का फुल खिला है ।

साँस गिन गिन के तुम को मिला है ये गवाने के काबिल नही है ।

बात बिल्कुल ये मानो सही है । जिसके देहात्म बुद्धी रही है

आत्म ज्ञान जिसको नही है मुक्ती पाने के काबिल नही है

जिसने हीरा से जे जन्म पाकर । खोज अपनी न की मन लगाकर

वह तो भगवान के पास जाकर मु।ह दिखाने के काबिल नही है

क्या तूं लेकर के आया था प्रानी । क्या तू लेकर करेगा रवानी

भूल बैथा है जिसको तू बंदे । वो भुलाने के काबिल नही है ।

नारायण भज भाई रे

नारायण भज नारायण भज, नारायण भज भाई रे ।

देखत दीन दयालु सदा, जन के मन की मधुराई रे । नारायण भज --

१ ॥ ना चाहिये दुनियाँ की दौलत, ना चाहिये ठकुराई रे ।

भिलनी के जूठे बेरों पर, रीझ गये रघुराई रे । नारायण भज ---

२ ॥ त्याग दिये नृप दुर्योधन के, मेवा और मिठाई रे ।

करी विदुर घर साग पात से, प्रेम भरी पहुँनाई रे । नारायण भज ---

३ ॥ पूज्य पिता दशरथ ने अन्तिम, श्रद्धाञ्जली नही पाई रे ।

अधम जटायू के पंखों पर, असुवन धार बहाई रे । नारायण भज ---

नटवर नागर नन्दा

नटवर नागर नन्दा भजो रे मन गोविन्दा ।

श्याम सुन्दर मुख चन्दा भजो रे मन गोविन्दा ।

तू ही नटवर तू ही नागर तू ही बाल मुकुन्दा भजो रे मन ॥ १ ॥

सब देवन मे कृष्ण बडे हैं । ज्यूं तारों मे चन्दा भजो रे मन ॥ २ ॥

सब सखियन मे राधा जी बडी हैं । ज्यूं नदियों मे गंगा भजो रे मन ॥ ३ ॥

ध्रुब तारे प्रहलाद उबारे । नरसिंह रुप धरंता भजो रे मन ॥ ४ ॥

कालीदह मे नाग ज्यों नाथ्यो । फणपर नृत्य करंता भजो रे मन ॥ ५ ॥

वृन्दावन मे रास रचायो । नाचत बाल मुकुन्दा भजो रे मन ॥ ६ ॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर काटो यम का फन्दा भजो रे मन ॥ ७ ॥

नटराज स्तुति

सत शृष्टि ताण्डव रचयिता । नटराज राज नमो नमः

हे आद्यगुरु शंकर पिता । नटराज राज नमो नमः ।

गम्भीर नाद मृदंगन धबके उरे ब्रह्माड़ ना । नित होत नाद प्रचंडना ।

नटराज राज नमो नमः ॥

शिर ज्ञान गंगा चंद्रमा चिद् ब्रह्म ज्योति ललाटमा । विषनाग माला कंठमा ।

नटराज राज नमो नमः ॥

तव शक्ति वामांगे स्थिता है चंद्रिका अपराजिता । चहु वेद गाये संहिता ।

नटराज राज नमो नमः ॥

नैया पार लगाओ

गिरे हुये अधमियों को दाता अपने हाथ उठाओ हो नैया पार लगा ओ।

१॥   हम कपटी पापी अति भारी दीन बन्धु तुम जग हित कारी ।

भूल चूक बिसरा ओ । मोरी नैया पार लगाओ ॥

२॥   हम मूरख विपदा के मारे। जान न पये भेद तिहारे ।

महिमा तुम्हारी प्रभु भेद तुम्हारे सुख की राह दिखा ओ   । मेरी नैया पार लगा

पायो जी मैंने

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो॥

वस्तू अमोलिक दी मेरे सतगुरु किरपा करी अपनायों। पायो जी मैंने ...

जनम जनम की पूँजी पाई जग में सभी खोवायो। पायो जी मैंने ...

खरचै न खूटै चोर न लूटै दिन दिन बढ़त सवायो। पायो जी मैंने ...

सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तरवायो। पायो जी मैंने ...

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर हरष हरष जस गायो। पायो जी मैंने ...

पग घुन्घरूँ बांध मीरा नाची रे

पग घुन्घरूँ बांध मीरा नाची रे ।

मै तो अपने नारायण की आपहि हो गयि दासी रे । पग घुन्घरूँ बांध

लोग कहें मीरा भई बावरी साँस कहे कुल नासी रे । पग घुन्घरूँ बांध

विष का प्याला राणा जी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे । पग घुन्घरूँ बांध

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर सहज मिले अविनासी रे । पग घुन्घरूँ बांध

पितु मातु सहायक

पितु मातु सहायक स्वामि-सखा । तुमही एक नाथ हमारे हो
जिनके कछु और आधार नही । तिनके तुमही रखवारे हो ।
सब भांति सदा सुखदायक हो । दुःख दुर्गुण नाशक हारे हो
प्रतिपाल करो सगरे जगको । अतिशय करुणा उर धारे हो ।
उपकारणको कछु अंत नही । छिनही छिन जो विस्तारे हो
भूली है हमही तुमको तुम तो । हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो ।
महाराज महा महिमा तुम्हरी । समुचे विरले बुधिवारे हो
शुभ शांतिनिकेतक प्रेमनिधे । मनमंदिरके उजियारे हो ।
यही जीवनके तुम जीवन हो । इन प्राणनके तुम प्यारे हो
तुमसो प्रभुपाय प्रतापहरी । केहिके अब और सहारे हो ।

॥ प्रभु मेरे अवगुण चित्त न धरो ॥

प्रभु मेरे अवगुण चित्त न धरो
समदर्शी प्रभु नाम तिहारो सो यी पार करो। प्रभु मेरे ...
इक लोहा पूजा मे राखत ईक घर बधिक परो
सो दुविधा पारस नहि जानत कंचन करत खरो। प्रभु मेरे ...
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो
जब मिल् दोऊ एक बरन होइ सुरसरी नाम परो। प्रभु मेरे ...
तन माया ज्यों ब्रम्ह कहावत सूर श्याम झगरो
अबकी बेर मोहि पार उतारो नही पन जात टरो। प्रभु मेरे ...

॥ पिये राम नाम का प्याला झूमे मस्ती मे बजरंग बाला ॥

पिये राम नाम का प्याला झूमे मस्ती मे बजरंग बाला ॥

अपने हृदय मे राम बसाय लियो । प्रभू चरनन का ध्यान लगाये लियो ।

जपे राम नाम की माला झूमे मस्ती मे बजरंग बाला ॥ पिये राम नाम का प्याला

सुवह शाम भजे बस राम भजे । प्रभू राम को बाला आठो याँम भजे ।

खाँवे राम नाम का निवाला झूमे मस्ती मे बजरंग बाला ॥ पिये राम नाम का प्याला

प्रभू राम के प्यारे मैया सीता के दुलारे । तूने राम के सारे बिगड़े काज सवारे ।

हर संकट से उसको निकाला झूमे मस्ती मे बजरंग बाला ॥ पिये राम नाम का प्याला

तन मन धन तूने राम नाम किया । बाला भक्ती मे तूने ऐसा काम किया ।

सिन्दूरी खुद को रंग डाला झूमे मस्ती मे बजरंग बाला ॥ पिये राम नाम का प्याला

गदाधारी की जय त्रिपुरारी की जय । शिव शंकर के बाला अवतारी की जय ।

सदा भक्तो की विपदा को टाला झूमे मस्ती मे बजरंग बाला ॥ पिये राम नाम का

प्रभु मिल जायेंगे

प्रेम की अगन हो भक्ति सघन हो । मन मे लगन हो तो प्रभु मिल जायेंगे

हृदय मे भाव हो अनुनय की चाव हो । आराधन का गाओ हो मन खिल जायेंगे

श्रद्धा की ज्योत हो मन मे ना खोट हो । करुणा का स्रोत हो तो प्रभु श्री आयेंगे

चरणो की चाह हो भक्ति प्रवाग हो । पूजा की राग हो तो प्रभु हर्शायेंगे

भजनो के बोल हो भाव अनमोल हो । अर्चन के मोल हो तो प्रभु मुसकायेंगे

नारायण धन हो छबी मे मगन हो । अर्चन वन्दन हो तो प्रभु दर्शायेंगे ॥

॥ प्रबल प्रेम के पाले पढ कर ॥

प्रबल प्रेम के पाले पड कर प्रभु को नियम बदलते देखा ।

अपना मान टले टल जाये पर भक्त का मान न टलते देखा ॥।

जिसकी केवल कृपा दृष्टी से सकल विश्व को पलते देखा।

उसको गोकुल मे माखन पर सौं सौं बार मचलते देखा॥ प्रबल प्रेम के ...

जिसका ध्यान विरंची शम्भु सनकादिक न सम्भलते देखा।

उसको ग्वाल सखा मंडल मे लेकर गेंद उछलते देखा॥ प्रबल प्रेम के ...

जिनके चरन कमल कमला के कर तल से न निकलते देखा।

उनको ब्रज की कुन्ज गलिन मे कंटक पथ पर चलते देखा॥ प्रबल प्रेम के ...

जिसकी वक्र भृकुटि के डर से सागर सप्त उछलते देखा।

उसको माँ यशोदा के भय से अश्रु बिन्दु दृग ढ़लते देखा॥ प्रबल प्रेम के ...

॥ प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम ॥

प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम। राम राम राम श्री राम राम राम॥

पाप कटें दुःख मिटें लेत राम नाम। भव समुद्र सुखद नाव एक राम नाम॥ प्रेम मुदित मन ...

परम शांति सुख निधान नित्य राम नाम। निराधार को आधार एक राम नाम॥ प्रेम मुदित

संत हृदय सदा बसत एक राम नाम। परम गोप्य परम इष्ट मंत्र राम नाम॥ प्रेम मुदित

महादेव सतत जपत दिव्य राम नाम। काशी मरत मुक्ति करत कहत राम नाम॥ प्रेम मुदित

मात पिता बंधु सखा सब ही राम नाम। भक्त जनन के जीवन धन एक राम नाम॥

प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम ॥

॥ बड़ी देर भई नन्दलाला ॥

बड़ी देर भई नन्दलाला तेरी राह तके बृजवाला ।

ग्वाल बाल इक इक से पूँछे कहाँ है मुरली वाला रे। बड़ी देर भई ...

कोई न जाये कुंज गलिन मे तुझ बिन कलियाँ चुननें को ।

तरस रहे हैं यमुना के तट धुन मुरली के सुननें को ।

आँके दरस दिखा जा प्रभु जी क्यों दुबिधा मे डाला रे। बड़ी देर भई ...

संकट मे हैं आज वो धरती जिस पर तूने जनम लिया ।

पूरा करदे आज वचन वो गीता में जो तूने दिया ।

कोई नही हैं तुझ बिन मोहन भक्तों का रखवाला रे। बड़ी देर भई ...

॥ बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम् रे ॥

बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे । मुझे दुनिया वालों से क्या काम रे

झूठीं दुनियाँ झूठे बंधन झूठीं है ये माया । झूठा साँस का आना जाना झूठीं है ये काया

ओ यहाँ साँचा तेरा नाम रे । बनवारी रे॥।

रंग में तेरे रंग गये गिरिधर छोड़ दिया जग सारा ।

बन गये तेरे प्रेम के जोगी ले के मन एकतारा ओ मुझे प्यारा तेरा धाम रे । बनवारी रे॥।

झूठी दुनिया झूठे बन्धन झूठी है यह माया । झूठा सांस का आना जाना झूठी है यह काया

ओऽऽऽऽ।यहां सांचा तेरा नाम रे। बनवारी रे॥

दर्शन तेरा जिस क्षण पाऊं हर चिन्ता मिट जाए । जीवन मेरा इन चरणों मे निश दिन ज्योत जलाए । ओऽऽऽऽ। मेरी बाह पकड़ लो श्याम रे। बनवारी रे॥

॥ भक्तों को दर्शन दे गयी रे ॥

जय जय जय जय माँ । भक्तों को दर्शन दे गयी रे इक छोटी सी कन्याँ

भक्तों ने पूँछा मैया नाम तेरा क्याँ हैं।

वैष्णव माँ बतला गयी रे इक छोती सी कन्याँ॥ भक्तों को दर्शन ...

भक्तों ने पूँछा मैय्या धाम तेरा क्याँ हैं ।

पर्वत त्रिकूट बता गयी रे इक छोती सी कन्याँ॥ भक्तों को दर्शन ...

भक्तों ने पूँछा माँ सवाँरी तेरा क्याँ हैं ।

पीला शेर बता गयी रे इक छोती सी कन्याँ॥ भक्तों को दर्शन ...

भक्तों ने पूँछा माँ प्रसाद् तेरा क्याँ हैं ।

हलुवा पूड़ी चना बता गयी रे इक छोती सी कन्याँ॥ भक्तों को दर्शन ...

भक्तों ने पूँछा माँ श्रिन्गार तेरा क्याँ हैं ।

चोला लाल बता गयी रे इक छोती सी कन्याँ॥ भक्तों को दर्शन ...

भक्तों ने पूछा माँ शस्त्र तेरा क्याँ हैं ।

चक्र त्रिशूल बता गयी रे इक छोती सी कन्याँ॥ भक्तों को दर्शन ...

भक्तों ने पूँछा सबसे प्यारा तेरा क्याँ हैं ।

भक्तों का प्यार बता गयी रे इक छोती सी कन्याँ॥ भक्तों को दर्शन ...

भज् मन् राम् चरण् सुखदाइ ॥

जिन् चरनन् से निकलीं सुरसरि शंकर् जटा समायी ।

जटा शंकरी नाम् पड़्यो है त्रिभुवन् तारन् आयी ॥ भज् मन् राम् चरण् सुखदाइ

जेहि चरनन की चरनपादुका भरत रह्यो लव लाइ ।

सो चरन केवट धोइ लीने तब हरि नाव चढाइ ॥ भज् मन् राम् चरण्

सो चरन् संतन् जन् सेवत् सदा रहत् सुखदाइ ।

सो चरन् गौतमऋषि नारी परसि परम पद पाइ ॥ भज् मन् राम् चरण् सुखदाइ

दंडकवन प्रभु पावन् कीन्हो ऋषियन् त्रास् मिटाइ ।

सो प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा सँग् धाइ ॥ भज् मन् राम् चरण्

कपि सुग्रीव बंधु भय व्याकुल तिन् जय छत्र फिराइ ।

रिपु को अनुज बिभीषन् निसिचर परसत् लंका पाइ ॥ भज् मन् राम् चरण् सुखदाइ

शिव् सनकादिक् अरु ब्रह्मादिक् शेष् सहस् मुख् गाइ ।

तुलसीदास् मारुतसुत् की प्रभु निज् मुख् करत् बढ़ाइ ॥ भज् मन् राम् चरण्

॥ भगवान मेरी नैया ॥

भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना । अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना ॥

सम्भव है झंझटों में मैं तुम को भूल जाऊँ ।

पर नाथ कहीं तुम भी मुझको न भुला देना ॥ भगवान

तुम देव मैं पुजारी तुम ईश मैं उपासक ।

यह बात सच है तो फिर सच कर के दिखा देना ॥ भगवान

भजता क्यों नहि रे मन मूरख राम नाम सच्चा नाम ।

१ ॥ भव सागर से है यदि तरना दुख शंकट से नहि कुछ डरना

पार करेगा जीवन नैय्या राम नाम सच्चा नाम । भजता क्यों----

२ ॥ दुनियाँ के ये रिश्ते नाते तज दे सब को हँसते गाते ।

जीवन है जब तक तू जपले राम नाम सच्चा नाम । भजता क्यों----

३ ॥ हीरों का ये हार बना है चमक दमक का हाट लगा है ।

सोच समझ कर सौदा कर ले राम नाम सच्चा नाम ॥ भजता क्यों----

माँ वेदों ने जो तेरी महीमा कही है

माँ वेदों ने जो तेरी महीमा कही है । सही है सही है सही है सही है सही ।

तु करुणा मयी और ममता मयी है । कोई दुर्गा काली भवानी कहे ।

कोई अम्बे रानी या वैश्नवी रानी कहे । महा माया गौरी तू कात्यायनी ।

तु ही शारदे लक्ष्मी नारायणि । तेरे नाम का कोई अन्त नही ।

सही है सही ह सही ह सही ह सही ॥

तुम्ही ने बनाया ये सन्सार माँ । ये चन्दा सितारे सुरज आसमां ।

ये पर्बत ये झरने ये फूल और वन । जिसे देख मन हो रहा है मगन ।

तेरी ही कृपा से टिकी है धरा। तेरी ही दया से टिकी धरती है ।

मुझे अपनी भक्ती का वर्दान दो । दया अब करो माँ मुझे ज्ञान दो ।

हो आशा पुरी मेरी मातेश्वरी । मेरे दिल मे हो बस मूरत तेरी ।

तेरे भक्तो की मैया विन्ती यही है । यही है यही है यही है यही है यही ।

माँ वेदों ने जो तेरी महिमा कही है । सही है सही है सही है सही है सही

माँगा है मैने श्याम से

माँगा है मैने श्याम से वरदान एक ही तेरी कृपा बनी रहे (2) जब तक है जिन्दगी

जिस पर प्रभू का हाथ था वो पार हो गया । जो भी शरण मे आ गया उद्धार हो गया

जिसका भरोसा श्याम पर डूबा कभी नही । तेरी कृपा बनी रहे जब तक हैं जिन्दगी

माँगा है मैने ...

कोई समझ सका नही माया बड़ी अजीब । जिसने प्रभू को पा लिया है वोही खुश नसीब । उसकी इजाजद के बिना पत्ता हिले नही ॥ माँगा है मैने ...

मन मे है राम मेरे तन मे हैं राम

मेरे मन मे है राम मेरे तन मे हैं राम मेरे रोम रोम मे समाया राम हैं .

मेरे सासों मे तेरा ही नाम है । हो मेरे सासों मे तेरा ही नाम है ।

तुम हो स्वामि अन्तरयामी । मै हू दास तिहारा, मै हू दास तिहार

तेरे लगन मे तेरे हि धुन मे, बीते जीवन सारा । हो सारा बीते जीवन सारा

जैसे फूलो मे रंग जैसे जल मे तरंग । मेरी आत्मा मे तुम हि आठो याम है... मेरे सासों ...

तु है ठाकुर मै तेरा चाकर 2 , जागु तेरे द्वारे हो निश दिन जागु तेरे द्वारे

हर संकट मे विघन विकत मे 2 , आऊ काम तिहारे, हो स्वामि आऊ काम तिहारे

जैसे नैनो मे तिल तारों मे है झिल मिल । मेरे सासों मे तेरा हि नाम है

मुकुन्द माधव गोविन्द बोल केशव माधव हरि हरि बोल

हरी हरी बोल हरी हरी बोल ... मुकुन्द ० , राम राम बोल सीता राम बोल ... मुकुन्द ०

श्याम श्याम बोल रधे श्याम बोल ... मुकुन्द ० , शिव शिव बोल उमा शिव बोल ... मुकुन्द ०

मुकुन्द माधव गोविन्द बोल केशव माधव हरि हरि बोल । हरी हरी बोल हरी हरी बोल... मुकुन्द ०

मंगल मूरति मारुति नंदन

मंगल मूरति मारुति नंदन सकल अमंगल मूल निकंदन। मंगल मूरति मारुति नंदन

पवन तनय सन्तन हितकारि हृदय बिरजात अवध बिहरि। मंगल मूरति मारुति नंदन

मात पिता गुरु गनपति शारद शिवा समेत शम्भू सुक नारद। मंगल मूरति मारुति नंदन

चरन बंदि बिनवौ सब काहु देहु रामपद नेह निबाहु। मंगल मूरति मारुति नंदन

बंदौ रम लखन वैदेही जे तुलसी के परम सनेही। मंगल मूरति मारुति नंदन

मंगल मूरती राम दुलारे

मंगल मूरती राम दुलारे । आन पड़ा अब तेरे द्वारे हे बजरंगबली हनुमान

हे महाबीर करो कल्यान॥ मंगल मूरती राम दुलारे---

तीनो लोक तेरा उँजियारा दुःखियों का तुने काज सवाँरा 2

हे जग बन्दन केसरी नन्दन 2 कष्ट हरो हे कृपा निधान 2 . मंगल मूरती राम दुलारे...

तेरे द्वारे जो भी आया खाली नही कोई लौताया 2 दुरगम काज बनावन हारे 2 मंगल मय

दीजों वर्दान मंगल मूरती राम दुलारे...

भक्ति कि ज्योत जगा दो मनमें राम कृपा बरसे जीवन में 2

बल बुद्धी विद्या के दाता 2 हर्लीजे मन का अज्ञान 2 . मंगल मूरती राम दुलारे...

तेरा सुमिरन हनुमत बीरा नासै रोग हरै सब पीरा 2

राम लखन सीता मन बसिया 2 शरण पड़े का कीजै ध्यान 2 मंगल मूरती राम दुलारे...

मीठे रस से भरी

मीठे रस से भरी राधा रानी लागे माहारानी लागे । मुझे खारा खार यमुना जी का पानी लागे ।

१- जमुना जी तो काली काली राधा गोरी गोरी । वृन्दावन मे धूम मचावे बरसाने छोरी ।

वृजधाम राधा जी की रजधानी लागे -२ मुझे खारा खारा जमुना जी का ---

२- ना भावे मुझे मांखन मिसरी ना भावे मिठाई । मेरी रसना को तो भावे राधा नाम मलाई ।

वृषभान की लली तो गुडधानी लागे -२ मुझे खारा खारा जमुना जी का ---

३- राधा राधा नाम जपत हैं जो नर आठों याम । तिनकी बाधा दूर करत है राधा राधा नाम ।

राधा नाम मे सफल जिंदगानी लागे .२ मुझे खारा खारा जमुना जी का ---

४- कान्हा नित मुरली मे टेरत सुमिरत बारम्बार । कोटिन रुप धरयो मन मोहन

तबहूं न पायो पार । रुप छेल की छबिली राधा रानी लागे .२

मुकुंद माधव गोविंद बोल

मुकुंद माधव गोविंद बोल । केशव मधव हरी हरी बोल।

राम राम बोल राम राम बोल। शिव शिव बोल शिव शिव बोल।

कृष्ण कृष्ण बोल कृष्ण कृष्ण बोल। मुकुंद माधव गोविंद बोल

केशव मधव हरी हरी बोल।

मेरे रामजी उतरेंगे पार

मेरे रामजी उतरेंगे पार री गंगा मैया धीरे बहो री

उछल मत बहना री मैया राम लखन संग सीता री मैया

मैया तुम्हीं लगावोगी पार री गंगा मैया...

टूटी फूटी काठ की नैया तुम बिन मैया कौन खिवैया

मेरी नैया पड़ी है मझधार री गंगा मैया...

ना राजा ना मैया योगी ना कोई साधु ना जोगी

मैया तुम्ही बनो री पतवार री गंगा मैया...

हम तो मैया शरण तिहारी माफ करो जो खता है हमारी

मैया कर दो भव से पार री गंगा मैया...

॥ मैली चादर ओढ़ के कैसे ॥

मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तुम्हारे आऊँ। हे पावन परमेश्वर मेरे मन ही मन शरमाऊँ॥

तूने मुझको जग में भेजा निर्मल देकर काया। आकर के संसार में मैंने इसको दाग लगाया।

जनम जनम की मैली चादर कैसे दाग छुड़ाऊँ॥ मैली चादर ओढ़ के कैसे ...

निर्मल वाणी पाकर मैंने नाम न तेरा गाया। नयन मूंद कर हे परमेश्वर कभी न तुझको ध्याया।

मन वीणा की तारें टूटीं अब क्या गीत सुनाऊँ॥ मैली चादर ओढ़ के कैसे ...

इन पैरों से चल कर तेरे मंदिर कभी न आया। जहां जहां हो पूजा तेरी कभी न शीश झुकाया।

हे हरि हर मैं हार के आया अब क्या हार चढ़ाऊँ॥ मैली चादर ओढ़ के कैसे ...

मैने अर्जी अपनी रखदी है

मै शरण तुम्हारी आया हुँ । प्रभु तूना स्वीकारे तो मै क्या करुँ ।

मैने अरजी अपनी रखदी है । प्रभु तू ना विचारे तो मै क्या करुँ ॥

१- मै जनम जनम का अपराधी । मेरे तन मन मे आधी व्याधी ॥

मै रोगी बनकर आया हूँ । हरि तू ना मिटाये तो मै क्य करुँ ॥ मै शरण --

२- आँधी ने चौदिश घेरा है । छाया सर्वत्र अन्धेरा है ॥

पथ भूलचुका तव आया हूँ । प्रभु तू ना दिखाये तो मैं क्या करुँ ॥ मै शरण --

३ जीवन पुनित निज करना है । मन ईश भक्ती से भरना है ॥

मै मुक्ती मागने आया हूँ । हरि तू ना दिलाये तो मै क्या करुँ ॥ मै शरण --

॥ मुझे अपनी शरण में ले लो राम ले लो राम ॥

मुझे अपनी शरण में ले लो राम ले लो राम । लोचन मन में जगह न हो तो

जुगल चरण में ले लो राम ले लो राम मुझे अपनि शरण मे ...

जीवन देके जाल बिछाया । रच के माया नाच नचया ।

चिन्ता मेरी तभी रुकेगी । जब चिंतन में ले लो राम ले लो राम मुझे अपनि शरण मे ...

तूँ ने लाखौं पापी तारे । मेरी बारी बाज़ी हारे बाज़ी हारे

मेरे पास न पुण्य की पूँजी । पदपूजन में ले लो राम ले लो राम । मुझे अपनि शरण मे ...

राम हे राम राम हे राम । दर दर भटकूँ घर घर अटकूँ

कहाँ कहाँ अपना सर पटकूँ । इस जीवन में मिलो न तुम तो राम हे राम

इस जीवन में मिलो न तुम तो । मुझे मरण में ले लो राम ले लो राम मुझे अपनि शरण मे ..

॥ यशोमती मैया से बोले नन्दलाला ॥

यशोमती मैया से बोले नन्दलाला राधा क्यों गोरी मै क्यों काला

बोली मुसकाती मैया ललन को बताया कारी अन्धियारी आँधी रात मे तूँ आया

लाडला कन्हैया मेरा हो ... लाडला कन्हैया मेरा काली कमली वाला इसीलिये काला।

यशोमती मैया

बोली मुसकाती मैया सुन मेरे प्यारे गोरी गोरी राधिका के नैंन कजरारे

काले नैनो वाली ने हो .... काले नैनो वाली ने तो ऐसा जादू डाला इसीलिये काला।।

यशोमती मैया

॥ राम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली ॥

राम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली, ले लो रे कोई राम का प्यारा शोर मचाऊ गली गली।

बोलो राम बोलो राम बोलो राम राम राम ॥

मायाके दीवानों सुन लो इक दिन ऐसा आयेगा । धन दौलत और माल खजाना यही पड़ा रह जायेगा

सुन्दर काया मिट्टी होगी चर्चा होगी गली गली ले लो रे ...

क्यों करता तू मेरा मेरी यहाँ तो तेरा मकान नहीं । झूठे जग मे फसा हुवा है वह सच्चा इन्सान नहीं

जग का मेला दो दिन का है अन्त मे होग चला चली ले लो रे ...

जिन जिन ने यह मोती लूटे वह तो माला माल हुये । धन दौलत के बने पुजारी आखिर वह कंगाल हुये । चाँदी सोने वालों सुन लो बात सुनाऊं खरी खरी ले लो रे ...

दुनियाँ को तू कब तक पगले अपनी कहलाएगा । ईश्वर को तू भूल गया है अन्त समय पछताएगा

दो दिन का यह चमन खिला फिर मुर्झाए कली कली ले लो रे ...

राम् से बड़ा राम् का नाम्।

राम् से बड़ा राम् का नाम्। अंत् में निकला ये परिणाम् ये परिणाम्।

सिमरिये नाम् रूप् बिन् देखे कौड़ी लगे न् दाम्।

नाम् के बाँधे खिंचे आयेंगे आखिर् एक् दिन् राम्॥

जिस् सागर् को बिना सेतु के लाँघ् सके ना राम्।

कूद् गये हनुमान् उसीको ले कर् राम् का नाम्॥

वो दिलवाले क्या पायेंगे जिन् में नहीं है नाम्।

वो पत्थर् भी तैरेंगे जिन् पर् लिखा हु श्री राम्॥

राधा रमण राधा रमण कहो

१॥ जिस हाल में जिस देश में जिस भेष में रहो।

राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो ॥

२॥ जिस काम में जिस गाम में जिस धाम में रहो।

राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो ॥

३॥ जिस संग में जिस रंग में जिस ढंग में रहो।

राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो ॥

४॥ जिस भोग में जिस रोग में जिस योग में रहो।

राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो ॥

॥ श्रीरामस्तुति ॥

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
नवकञ्ज लोचन कञ्ज मुखकर कञ्जपद कञ्जरुणं ॥ १ ॥
कंदर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुन्दरं ।
पटपीत पानहुँ तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरं ॥ २ ॥
भजु दीन बन्धु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकन्दनं ।
रघुनन्द आनंदकंद कोशल चन्द दशरथ नन्दनं ॥ ३ ॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषणं ।
आजानुभुज सर चापधर सङ्ग्राम जित खरदूषणं ॥ ४ ॥
इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मनरञ्जनं ।
मम हृदयकञ्ज निवास कुरु कामादिखलदलमञ्जनं ॥ ५ ॥
मन जाहि राचो मिलहि सोवर सहजसुन्दर सांवरो ।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो । ६ ॥
एहि भाँति गौरि अशीस सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥ ७ ॥

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्षनः जात कहि ।
मञ्जुल मङ्गल मूल वाम अङ्ग परकन लगे

॥श्री राधे गोविंदा मन भजले हरी का प्यारा नाम है ॥

जय गणेश गणनाथ दयानिधी सकल विघन करो दूर हमारे।

मम वंदन स्वीकार करो प्रभु चरण शरण हम आए तुम्हारे ।

जय गणेश गणनाथ दयानिधी ॥

जय नंदलाला जय गोपाला जय नंदलाला जय जय

श्री राधे गोविंदा मन भजले हरि का प्यारा नाम है।

गोपाल हरि का प्यारा नाम है नंदलाला हरि का प्यारा नाम है श्री राधे गोविंदा मन भजले ॥

मोर मुकुट सिर गल-बन माला केसर तिलक लगाये , केसर तिलक लगाये

बृन्दाबन की कुन्ज गलिन मे सब को नाच नचाये सब को नाच नचाये ॥

श्री राधे गोविंदा मन भजले

यमुना किनारे धेनू चराये माधव मदन मूरारी माधव मदन मुरारी ।

मधुर मुरलिया जब भी भजावे हरले सुध बुध सारि , हरले सुध बुध सारि ॥

श्री राधे गोविंदा मन

गिरधर नागर कहती मीरा सूर को श्यामल भाया, सूर को श्यामल भाया ।

तुकाराम और नाम देव ने विठ्ठल विठ्ठल गाया , विठ्ठल विठ्ठल गाया ॥

श्री राधे गोविंदा मन भजले

गोपाल हरि का प्यारा नाम है नंदलाला हरि का प्यारा नाम है श्री राधे गोविंदा मन भजले .

॥ राधे तेरे चरणों की ॥

राधे तेरे चरणों की श्यामा तेरे चरणो की । गर धूल ही मिल जाये

सच कहता हुँ मेरी तकदीर बदल जाये ॥ राधे तेरे चरणों ...

सुनते है तेरी रहमत दिन रात बरसती है ।

एक बूंद जो मिल जाये जीवन ही बदल जाये ॥ राधे तेरे चरणों ...

ये मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करूँ ।

इसे जितना ही समझाऊ उतना ही मचल जाये ॥ राधे तेरे चरणों ...

नजरों से गिराना ना चाहे जितनी सजा देना । नजरो से जो गिर जाये मुश्किल से सम्भल पाये ॥ राधे तेरे चरणों ...

श्यामा इस जीवन में बस एक तमन्ना है । तुम सामने हो मेरे मेरा दम ही निकल जाये ॥

राधे तेरे चरणों ...

लंका मे आग लगाये कपि

लंका मे आग लगाये कपि रावन का गर्व मिटाये ।

सीता खोजन को उड़ गये लंका । छुपके से नगर मे आये कपि रावन का गर्व मिटाये।

लंका मे आग लगाये॥

बड़ा सुन्दर महल इक देखा । रावन था शयन लगाये कपि रावन का गर्व मिटाये। लंका मे आग

बिभीशन से दोस्ति बढाई । वहि माँ का पता बताये । कपि रावन का गर्व मिटाये। लंका मे आग

उलट पलट कर लंका जारे । अक्षय को मार गिराये कपि रावन का गर्व मिटाये। लंका मे आग

ब्रह्म अस्त्र को खुद सह कर के । ब्रह्मा का मान बढ़ाये कपि रावन का गर्व मिटाये। लंका मे आग

लौटे चूडा मनि संग लाये । भगवान को कथा सुनाये कपि रावन का गर्व मिटाये।

लंका मे आग लगाये कपि रावन का गर्व मिटाये॥

वीणा पुस्तक मंगल हस्ते

सरस्वती मया द्रष्टा वीणा पुस्तक धारिणी । हंस वाहन संयुक्ता विद्या दानं करोतु मे ॥

वीणा पुस्तक मंगल हस्ते, भगवती भारती देवी नमस्ते ॥

माँ शारदे तुम वीणा बजा कर, सात स्वरों से जग को लुभा कर ।

मोह तिमिर से हमको जगा कर, सत्मार्ग मे माँ हमे लगाती ॥ १ ॥

वीणा पुस्तक मंगल हस्ते, भगवती भारती देवी नमस्ते ॥

हम दीन बालक विनती सुनाते, चरणों मे तेरे मस्तक झुकाते ।

अज्ञानतम से हमें दूर करदो, विद्या विनय से सम्पूर्ण कर दो ॥ २ ॥

वीणा पुस्तक मंगल हस्ते, भगवती भारती देवी नमस्ते ॥

माँ शारदे सुन लो विनती हमारी, करके दया हर लो बाधा हमारी

हमें दर्श दो माँ हमें स्पर्श दो माँ, जीवन सफलतम और पूर्ण हो माँ ॥ ३ ॥

वीणा पुस्तक मंगल हस्ते, भगवती भारती देवी नमस्ते ॥

सबसे ऊँची प्रेम सगाई

सबसे ऊँची प्रेम सगाई, सबसे ऊँची प्रेम सगाई

दुर्योधन को मेवा त्याग्यो, साग विदुर घर खाई। सबसे ऊँची ----

जूठे फल शवरी के खाये, बहु विधि स्वाद बताई। १ ॥ सबसे ऊँची ----

प्रेम के बस अर्जुन रथ हाँक्यो, भूल गये ठकुराई। २ ॥ सबसे ऊँची ----

ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दाबन, गोपिन नाच नचाई। ३ ॥ सबसे ऊँची ----

सूर क्रुर इस लायक नाही, कहँ लगी करो बड़ाई। ४ ॥ सबसे ऊँची ----

सीताराम कहिये।

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये। जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये॥

मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में। तूँ अकेला नहिं प्यारे राम तेरे साथ में।

विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये। सीताराम सीताराम ...

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा। होगा प्यारे वही जो श्री रामजी को भायेगा।

फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये। सीताराम सीताराम ...

जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के। महलों मे राखे चाहे झोंपड़ी मे वास दे।

धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये। सीताराम सीताराम ...

आशा एक रामजी से दूजी आशा छोड़ दे। नाता एक रामजी से दूजे नाते तोड़ दे।

साधु संग राम रंग अंग अंग रंगिये। काम रस त्याग प्यारे राम रस पीजिये। सीताराम सीताराम ...

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये। जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ॥

॥ सीता के राम राधा के श्याम ॥

सीता के राम राधा के श्याम । मीरा के गिरिधर नागर सूर के घनश्याम । सीता के राम --

महलों का सुख छोड़ सिया ने राम का साथ निभाया ।

लक्ष्मी ने धर रूप सियाका जग का पाप मिटाया। बना दिया था इस धरती को राम-भक्ति का धाम।

सीता के राम ...

राधा ने श्री श्यामसुंदर संग ऐसा रास रचाया । तीन लोक मे श्याम और राधा का है रूप समाया ।

कोटि कोटि भक्तों के मुख पर राधे-श्याम का नाम। सीता के राम ...

मीरा ने महलों की झूठी महिमा को ठुकराया । तोड़ जगत के बंधन अपने घिरधर को अपनाया ।

प्रेम दिवानी मीरा को करते है भक्त प्रणाम। सीता के राम ...

सीता राधा और मीरा के सबसे न्यारे स्वामी । सबसे न्यारे सब के प्यारे स्वामी अन्तरयामी ।

सदा बनाया करते प्रभु जी सब के बिगड़े काम। सीता के राम ...

सुन बरसाने वाली

सुन बरसाने वाली गुलाम तेरो बन वारी ।

१- तेरी पायलिया पे बाजे मुरलिया । छम् छम् नाचे गिरधारी गुलाम तेरो .

२- चाँद से मुखडे पे बडी बडी अँखियां । लट लटके धुंधराली गुलाम तेरो .

३- बडी बडी अँखियन मे झीना झीना कजरा । धायल कुंज बिहरी गुलाम तेरो .

४- वृन्दावन के राजा होकर । छांछ पे नाचे मुरारी गुलाम तेरो .

५- कदम्ब की डाल पे झुला पडा है । झोटा देवे गिरधारी गुलाम .

६- वृन्दावन की कुन्ज गलिन मे । रास रच्यो गिरधारी गुलाम तेरो .

७- बडे बडे देव खडे दर्शन को चाकर कुन्ज बिहारी गुलाम तेरो बनवारी .

सुमिरन करले मेरे मना

सुमिरन कर ले मेरे मना तेरी बीती उमर हरि भजन बिना ।

१ - यह काया तेरा मन्दिर है प्रभु रहता इस के अन्दर है ।

अन्तर के पट खोल मना तेरी बीती उमर हरि भजन बिना ॥

तात मिले पुनि मात मिले सुत भ्रात मिले युवती सुखदाइ । राज मिले गज बाजी मिले सब साज मिले मन वाँक्षित पाई । यह लोक मिले पर लोक मिले विधि लोक मिले वैकुण्ठहु पाई । सुन्दर और मिले सबही कुछ सन्त समागम दुर्लभ भाई ॥

सुमिरन कर ले मेरे मना तेरी बीती उमर हरि भजन बिना ।

२ - जीवन है यह कुछ दिन का क्यों फ़िरता डावाँ डोल मना ।

यह हीरा है अनमोल बना तेरी बीती उमर हरि भजन बिना ॥

सुमिरन करले मेरे मना तेरी बीती उमर हरि भजन बिना ।

ॐ शिव परात्परा शिव

ॐ शिव ॐ शिव परात्परा शिव ॐकारा शिव तव शरणं

नमामी शंकर भवानी शंकर । उमा महेश्वर तव शरणं ॐ शिव ॐ शिव परात्परा शिव

हे वृसभद्वज हे धर्मध्वज । सांब सदाशिव तव शरणं ॐ शिव ॐ शिव परात्परा शिव

हे जगदीश पिनाकी महेश्वर । त्रिनयन शंकर तव शरणं । ॐ शिव ॐ शिव परात्परा शिव

हे शशिशेखर शंभू सदाशिव , शिव गंगाधर तव शरणं , ॐ शिव ॐ शिव परात्परा शिव

हे शूलपाणी सोम शिवाप्रिय । शिव शिपिविष्टः तव शरणं । ॐ शिव ॐ शिव परात्परा शिव

हे मृतुन्जय पशुपती शंकर । भुजंग भूशण तव शरणं ॐ शिव ॐ शिव परात्परा शिव

कैलाश वासी रुद्र गिरीश । पारवती पति हर तव शरणं ॐ शिव ॐ शिव परात्परा शिव

शरण मे आये हैं हम

शरण मे आये हैं हम तुम्हारी । दया करो हे दयालु भगवन ।

सम्हालो बिगडी दसा हमारी । कृपा करो हे कृपालु भगवन ॥

१- न हम मे बल है न हम मे बुद्धि । न हम मे साधन न हम मे भक्ती ।

तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी दया करो हे दयालु भगवन् ॥

२ - सुना है हम अंश हैं तुम्हारे । तुम्ही हो सच्चे प्रभु हमारे ।

तुम्हारे होकर के हम दुखारी दया करो हे दयालु भगवन् ॥

३ - प्रदान करदो महान शक्ती । भरो हमारे मे ज्ञान भक्ती ।

तभी कहाओगे ताप हारी । दया करो हे दयालु भगवन् ॥

शक्ति के तीन रूप

आद्या शक्ति के रूप मे जो रहती निर्गुन रूप । भक्तो की रक्षा के लिये जो धरती तीन स्वरुप

जय जग जननी जय माहामाया दुर्गा दुर्गति हारी । हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

तू ही दुर्गा तू ही लक्ष्मी तेरे रूप अनेक । तू ही वाणी रूप बनीहै फ़िर भी तू है एक ।

सत्व रजस् और तमो भाव से रहती तू निर्लेप । हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

मोह हुआ जब तीन देव मे आकर उन्हे बचाया । माहाकाली बन तमोभाव से जीवों को भरमाया ।

तू ही निन्द्रा तू ही माया प्रग्या तू है माहान । हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

रजो भाव से माहालक्ष्मी बन चेतन शक्ती जगाइ । मात्रि भाव से पाला तू ने जग के जीव सदाही ।

भक्तों मे सद्भाव बुद्धि बन ग्यान प्रभा लहराइ । हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

सत्व भाव से माहा सरस्वती ग्यन स्वरूप धरे । सारे जग को अन्धकार से क्षण मे मुक्त करे ।

हे ज्वाला हे वैष्णो तू ने लाखों कष्ट हरे । हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी॥

जव जव पीर पडी भक्तों पर आकर आन बचाइ । शुम्भ निशुम्भ माहाबलि दानव क्षण मे मुक्ती पाइ

तू है काली तू है पालक तू ने स्रष्टि रचाइ । हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

शंकर तेरी जटा मे बहती है गंग धारा

शंकर तेरी जटा मे बहती है गंग धारा । काली धटा के अन्दर जिमि दामिनी उजारा ।

गल मुण्ड माल राजे । शशि भाल मे बिराजे । डमरु निनाद बाजे कर मे त्रिशूल भारी ।

दृग तीन तेज राशी कटिबन्ध नाग फासी । गिरिजा है संग दासी सब विश्व के अधारा ।

मृग चर्म वसन धारी वृषराज पे सवारी । निज भक्त दुख हारी कैलाश मे विहारी । शिव नाम जो उचारे सब पाप दोष टारे ब्रह्मानन्द बिसारे भव सिन्धु पार पारा । भोले तेरी जटामे ----

श्याम रसिया

श्याम रसिया मेरे मन बसिया । रुचि रुचि भोग लगाओ रसिया ।

दुर्योधन के मेवा त्याग्यो । साग विदुर घर खायो रसिया रुचि रुचि भोग -

शवरी के वेर सुदामा के तंडुल । माँग माँग हरि खायो रसिया रुचि रुचि -

राधा रानी के मन मे बसगयो । औरन को हर्षायो रसिया रुचि रुचि -

जो मेरे श्याम को भोग लगावे । छूट जाय लख चौरसिया रुचि रुचि -

सूर श्याम बलिहारि चरण की । हृदय कमल में रहो बसिया रुचि रुचि .

श्याम तेरी बंसी पुकारे राधा नाम

श्याम तेरी बंसी पुकारे राधा नाम । लोग करें मीरा को यूँ ही बदनाम

साँवरे की बंसी को बजने से काम । राधा का भी श्याम वोतो मीरा का भी श्याम

जमुना की लहरें बंसीबट की छैयां । किसका नहीं है कहो कृष्ण कन्हैया

श्याम् का दीवाना तो सारा बृज धाम । लोग करें मीरा को यूँ ही बदनाम

कौन जाने बाँसुरिया किसको बुलाये । जिसके मन भाए वो उसी के गुण गाए

कौन नहीं बंसी की धुन् का गुलाम । राधा का भी ॥ ।

श्रवण कुमार गाथा

हम कथा सुनाते प्यारे श्रवण कुमार की ।यह गाथा है इक निर्मल भक्त महान की ।

अवध की पावन धरती पर था जिसने अपना जनम लिया ।जहाँ माता पिता की भक्ती

का ईतिहाँस को था सन्देश मिला । यह पितृ भक्त उस बालक के सम्मान की ॥ १ ॥

हम कथा-

माँ ज्ञानार्ती शान्तनु की जो इकलौती सन्तान थी

जब श्रवण कुमार ने जनम लिया सारी पृथ्वी अभिराम थी ।

पितु मातु के राजदुलार की ॥ २ ॥ हम कथा-

जब मात पिता को तीरथ पर श्रवण मगन हो ले जाते हैं ।

चलते चलते थक राहों पर उन्हे कांवड पर बिठलाते हैं ।

उस बीर पुत्र की महिमा के गुण गान की ॥ ३ ॥ हम कथा-

हे प्राणों से प्यारे कुमार हम प्यास से ब्याकुल होते है ।

सुन मात पिता की वाणी को जल लेने को जब जाते हैं ।

इस आज्ञा पालक सेवक धर्म महान की ॥ ४ ॥ हम कथा-

नदी किनारे आकर के जब श्रवण ने कमण्डल छोड दिया ।

सुन आहट राजा दशरथ ने म्यान से तीर को छोड दिया ।

इस करुणा कारक पूज्यापाद बलिदान की ॥ ५ ॥ हम कथा-

राजा दशरथ ने देखा तो पैर जमी से खिसक गये ।

अनजाने मे चले तीर से जो हानी हुयी वे समझ गये ।

जान बचाने दौडे थे जब राजा श्रवण कुमार की ॥ ६ ॥ हम कथा-

श्रवण कुमार ने राजा को अपना कमण्डल सौंपदिया ।

मेरे माता पिता जी प्यासे हैं और नेत्र हीन शन्देश दिया ।

जीवन की चिन्ता किये बिना कर्तव्य निभाने वाले की ॥ ७ ॥ हम कथा-

राजा दशरथ ने घट से जब मौन ही जल का दान किया ।

कहो बेटा चिन्ता कैसी और मौन काहाँ से मोल लिया ।

तव कथा सुनाते दशरथ क्लेश महान की ॥ ८ ॥ हम कथा-

बोले श्रवण के माता पिता इक दिन ऐसा भी आयेगा ।

पुत्र वियोग का भारी दुख इसीभाँति तडपायेगा ।

क्या लीला है इस कर्म प्रबल संसार की ॥ ९ ॥ हम कथा-

जग यह सार रहित है तो मात पिता इक सार है ।

सब कुछ कर्म जनित है पर मिले न दूजी बार ये ।

यह अद्भुत गाथा प्रेमी भक्त माहान की

हरि भक्त उठो हरि नाम जपो

हरि भक्त उठो हरि नाम जपो श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ।

इस प्रेम सुधा का स्वाद चखो श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे

संसार सुने सब मिल के कहो इस मोहनि मन्त्र का जाप करो

मोहन की मुरलिया मन मे बजे श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ।

हमे चाहिये श्रद्धा भक्ती से गोपाल के नाम का गान करे

पट खोल के घट के दर्शन कर श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे

प्रकाश जगत मे करता है वो नन्द की आखों का तारा

तेरे नैनों मे वो शयन करे श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे

जाहाँ श्याम के दर्शन हों निश दिन उस प्रेम नगर मे जाय बसें

इस धुन मे जियें इस धुन मे रमें श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ॥

॥ हे बाँके बिहारी गिरिधारी ॥

हे बाँके बिहारी गिरिधारी हो प्यार तुम्हारे चरनो में

मोहन मधुसुदन बनवारी हो प्यार तुम्हारे चरणो में ॥

मै जग से ऊब चुका मोहन सब जग को परख चुका मोहन

अब शरण तिहारी गिरिधारी हो प्यार तुम्हारे चरणो में। हे बाँके बिहारी गिरिधारी

भाई सुत दार कुटुम्बी जन मै मेरे से सिघरे बन्धन

सब स्वारथ के ये संसारी हो प्यार तुम्हारे चरणो में। हे बाँके बिहारी गिरिधारी ...

पापी अजापि नर नारी इन चरणो से जिनकी यारी

उन के हरि हो तुम भय हारी हो प्यार तुम्हारे चरणो में। हे बाँके बिहारी गिरिधारी

मै सुख मे रहूँ चाहे दुःख मे रहूँ काटों मे रहू फूलों मे रहूँ

बन मे घर मे जहा भी रहूँ हो प्यार तुम्हारे चरणो में। हे बाँके बिहारी गिरिधारी ...

नख कुन्ड कांति कस्तूरी सम चरचित चन्दन अरपित मम मन

तेरे चरणों की बलिहारी हो प्यार तुम्हारे चरणो में। हे बाँके बिहारी गिरिधारी ...

मन के मन्दिर मे आवो तुम नस नस मे श्याम समावो तुम

तुमरे है हम हमरे है तुम हो प्यार तुम्हारे चरणो में। हे बाँके बिहारी गिरिधारी ...

इस जीवन के तुम जीवन हो हे श्याम तुम्ही मेरे धन हो

सुख शान्ति मुल के चिन्तन हो हो प्यार तुम्हारे चरणो में।

हे बाँके बिहारी गिरिधारी ...

॥ हे नाथ अब तो ऐसी दया हो ॥

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो जीवन निरर्थक जाने ना पाये।

यह मन न जाने क्या क्या कराये कुछ बन न पाये अपनी बनाये॥ हे नाथ अब तो ...

सन्सार मे ही आसक्त रह कर दिन रात अपने मतलब की कह कर।

सुख के लिये लाखो दुख सह कर ये दिन अभी तक यों ही बिताये॥ हे नाथ अब

ऐसा जगा दे फिर सों ना जाऊँ अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।

मै आप को चाहूँ और पाऊँ सन्सार का भय रह कुछ न जाये॥ हे नाथ अब तो ...

वह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ अपने हृदय मे सद्भाव भर लूँ।

नर तन है साधन भवसिन्धू तर लूँ ऐसा समय फिर आये न आये॥ हे नाथ अब

हे नाथ मुझे निरभिमानी बना दो दारिद्र हर लो दानी बना दो।

आनन्दमय विज्ञानी बना दो मैं हूँ तुम्हारी आशा लगाये॥ हे नाथ अब तो ...

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो जीवन निरर्थक जाने ना पाये ।

यह मन न जाने क्या क्या कराये कुछ बन न पाये अपनी बनाये ।

॥ हे राम हे राम ॥

हे राम हे राम हे राम हे राम जग मे सचो तेरो नाम॥ हे राम ...

तूँ ही माता तूँ ही पिता है तूँ ही तो है राधा का श्याम। हे राम ...

तूँ अन्तरयामी सब का स्वामी तेरे चरणों मे चारो धाम। हे राम ...

तूँ ही बिगाड़े तूँ हि सवारे इस जग के सारे काम। हे राम ...

तूँ हि जग दाता विश्व विधाता तूँ ही सुबह हो तूँ ही श्याम। हे राम ...

हे राम हे राम हे राम हे राम जग मे सचो तेरो नाम॥ हे राम ...

हे प्रभु आनन्द दाता

हे प्रभु आनन्द दाता ज्ञान हम को दी जिये । शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से की हे प्रभो

ळीजिये हम को शरण मे हम सदाचरी बने ।

शान्ती चाहक धर्म रक्षक वीर व्रत्धारी बने । हे प्रभु ॥

प्रेम से हम गुरु जनों की नित्य ही सेव करें ।

सत्य बोले झूठ त्यागें मेल आपस मे करे । हे प्रभु

निन्दा किसी की हम किसी से भुलकर भी ना करें ।

दिव्य जीवन हो हमारा तेरे यश् गाया करें । हे प्रभु आनन्द दाता ज्ञान हम को दी जिये ॥

हे शारदे माँ हे शारदे माँ

हे शारदे माँ हे शारदे माँ । अज्ञानता से हमे तार दे माँ ।

तू स्वर कि देवी ये संगीत तुझसे । हर शब्द तेरे है हर गीत तुझसे

हम है अकेले हम है अधूरे । तेरी शरण हम हमे तार दे माँ ॥ हे शारदे माँ...

तू श्वेत वरणी कमल पे बिराजे । हाथों मे वीणा मुकुट सर पे साजे

मन से हमारे मिटा के अंधेरे । हम को उजालों का संसार दे माँ ॥ हे शारदे माँ...

मुनियों ने समजी गुनियों ने जानी । वेदों की भाशा पुरानो की वानी

हम भी तो समझे हम भी तो जाने । विद्या का हमको अधिकार दे माँ ॥ हे शारदे माँ...

आरती कुञ्जविहारीकी

आरती कुञ्जविहारीकी। श्रीगिरिधर कृष्णमुरारीकी॥

गले में बैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला। श्रवन मे कुण्डल झलकाला,

नन्दके नन्द   श्रीआनन्दकन्द मोहन व्रजचन्द राधिका रमणबिहारी की।

श्री गिरिधर॥

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आलि, लतन में ठाढ़े

बनमाली। भ्रमर-सी अलक   कस्तूरी तिलक   चन्द्र-सी झलक

ललितछबि श्यामा प्यारीकी। श्री गिरिधर॥

कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दर्शन को तरसै, गगन सों सुमन रासि बरसै

बजे मुहचंग मधुर मिरदंग ग्वालनी संग   अतुल रति गोपकुमारीकी।

श्री गिरिधर॥

जहाँ ते प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा स्मरन ते होत मोह भंगा

बसि शिव शीश जटाके बीच हरै अघ कीच   चरन छबी श्रीवनवारीकी।

श्री गिरिधर॥

चमकती उज्जवल तट रेनू, बज रही बृन्दाबन वेनू, चहूं दिस गोपि-ग्वाल धेनु

हँसत मृदु मंद चाँदनी चन्द कटत भव फंद टेर सुनु दीन भिखारीकी।

श्री गिरिधर॥

श्री कृष्ण -आरती

ॐ जय कृष्ण हरे प्रभु जय कृष्ण हरे ।

भगतन के दुख सारे पल मे दूर करे ॐ जय कृष्ण हरे ॥

परमानन्द मुरारी मोहन गिर धारी । स्वामी-

जै रस रास विहारी जै जै गिर धारी ॐ जय कृष्ण हरे ॥

कर कंगन कटि किंकिनि श्रुति कुण्डल माला । स्वामी -

मोर मुकुट पीतांबर। सोहे बन माला ओम जय क्रीष्ण हरे ॥

निरखत दीन सुदामा दैन्य दुख टारे । स्वामी -

गज के फन्द छुडाकर भव सागर तारे ओम जय क्रीष्ण हरे ॥

हिरण्यकष्यप संहरे नरहरि रूप धरे । स्वामी -

पाहन ते प्रभु प्रगटे जन के बीच परे ओम जय क्रीष्ण हरे ॥

केशी केश बिदारे नर कुबेर तारे ।स्वामी -

दामोदर छवि सुन्दर भगवत रखवारे ओम जय क्रीष्ण हरे ॥

काली नाग नथैय्या नटवर छवि सोहे । स्वामी -

फन पर नृत्यकरे हरि नागन मन मोहे ओम जय क्रीष्ण हरे ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे आरती ॥

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे।

भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे । ॐ जय जगदीश हरे

जो ध्यावे फल पावे दुख बिनसे मन का।

सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का। ॐ जय जगदीश हरे

मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी।

तुम बिन और ना दूजा आश करुँ किसकी। ॐ जय जगदीश हरे

तुम पूरण परमात्मा तुम अंतरयामी।

पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी। ॐ जय जगदीश हरे

तुम करुणा के सागर तुम पालन करता।

मै मूरख खल कामी कृपा करो भरता। ॐ जय जगदीश हरे

तुमहो एक अगोचर सबके प्राण पती।

किस विधि मिलूँ दयामय तुमको मैं कुमति। ॐ जय जगदीश हरे

दीन बंधु दुख हरता तुम रक्षक मेरे।

करुणा हस्त बढ़ाओ द्वार पड़ा तेरे। ॐ जय जगदीश हरे

विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा।

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा। ॐ जय जगदीश हरे

तन मन धन सब कुछ है तेरा।

तेरा तुझ को अर्पण क्या लागे मेरा। ॐ जय जगदीश हरे .

॥ श्री सत्य नारायण जी की आरती ॥

ॐ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी जय लक्ष्मी रमणा,

सत्य नारायण स्वामी जन पातक हरणा ॐ जय लक्ष्मी ---

रत्न जटित सिंधासन अद्भुत छबि राजै,

नारद करत निराजन धंटा ध्वनि बाजै ॐ जय लक्ष्मी ---

प्रकट भये कलि कारण द्विज को दरस दियो,

बूढ़े ब्राह्मण बनकर कञ्चन महल कियो ॐ जय लक्ष्मी ---

दुर्बल भील काष्ठहर जिन पर कृपा करी,

चन्द्र चूड़ एक राजा जिनकी विपति हरी ॐ जय लक्ष्मी ---

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीन्हीं,

सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं ॐ जय लक्ष्मी ---

भाव भक्ति के कारण छिन छिन रूप धर्‍यो,

श्रद्धा धारण कीनी तिनके काज सर्‍यो ॐ जय लक्ष्मी ---

ग्वाल बाल संग राजा बन में भक्ति करी,

मन वांच्छित फल दीन्हों दीन दयालु हरी ॐ जय लक्ष्मी ---

चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा.

धूप दीप तुलसी से राजी सत्य देवा ॐ जय लक्ष्मी ---

सत्यनारायण जी की आरती जो गावै.

तन धन सुख सम्पति फल मन वाँछित पावै ॐ जय लक्ष्मी ---

॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

ॐ जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धाङ्गि धारा ॥। ॐ हर हर हर महादेव।

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजें।

हंसासन गरुड़ासन वृशवाहन साजें ॥। ॐ हर हर हर महादेव।

दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहें

तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहें ॥। ॐ हर हर हर महादेव।

अक्षमाला बनमाला रुंडमाला धारी।

चन्दन मृगमद सोहे भोले शुभकारी ॥। ॐ हर हर हर महादेव।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अङ्गे।

ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक सङ्गे ॥। ॐ हर हर हर महादेव।

कर्मध्ये च कमन्डलु चक्र त्रिशूल धर्ता।

जगकर्ता दुखहर्ता जगपालन कर्ता ॥। ॐ हर हर हर महादेव।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।

प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ॥। ॐ हर हर हर महादेव।

त्रिगुन स्वामि की आरती जो कोइ नर गावे।

कहत शिवानन्द स्वामी मनवान्छित पावें ॥। ॐ हर हर हर महादेव।

ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता

ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता ।

तुम को निस दिन सेवत हर विष्णु धाता। ॐ जय लक्ष्मी माता॥

उमा रमा ब्रह्माणी तुम ही जग माता ।

सूर्य चन्द्र माँ ध्यावत नारद ऋषि गाता । ॐ जय लक्ष्मी माता॥

दुर्गा रूप निरंजनि सुख सम्पति दाता ।

जो कोई तुम को ध्यावत ऋद्धि सिद्धि धन पाता । ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम पाताल निवासिनि तुम ही शुभ दाता ।

कर्म प्रभाव प्रकाशिनि भव निधि की दाता । ॐ जय लक्ष्मी माता॥

जिस घर तुम रहती तहँ सब सद्गुण आता ।

सब संभव हो जाता मन नहीं घबराता । ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम बिन यज्ञ न होते वस्त्र न को पाता ।

खान पान का वैभव सब तुम से आता । ॐ जय लक्ष्मी माता॥

शुभ गुण मंदिर सुंदर क्षीरोदधि जाता ।

रत्न चतुर्दश तुम बिन को नहीं पाता । ॐ जय लक्ष्मी माता॥

महा लक्ष्मीजी की आरती जो को जन गाता ।

उर आनंद समाता पाप उतर जाता । ॐ जय लक्ष्मी माता॥

॥ श्रीरामचन्द्रजी की आरती ॥

ॐ जय श्री राम हरे, स्वामी जय श्री राम हरे।

सकल भुवन को तारक, पावन चरित करे ॥ ॐ जय

भक्तवत्सल तुम स्वामी, भक्तन हितकारी।

भक्त प्रेमवश जगमें, होतें अवतारी ॥ ॐ जय

जगव्यापक जगपालक, घत घत के वासी।

क्रिपासिन्धु सुखसागर, आनन्द के रासी ॥ ॐ जय

पारब्रह्म परमेश्वर, तुम करुणा करता।

मैं हूँ शरणतिहारी, तुम हो भय हरता ॥ ॐ जय

अर्चन वन्दन सेवन, सब साधन दीना।

अपनें चरण शरण में, राखहु जन दीना ॥ ॐ जय

भुवनेश्वर सर्वेश्वर, देवन के देवा ।

चरण कमल की दिजे, नाथ हमें सेवा ॥ ॐ जय

गुरु पितु मात सहायक, तुम हो रघुराईं।

अपना दास बनाओ, सेवक सुखदाई ॥ ॐ जय

भवभंजन जनरंजन, रक्षक अनुगामी।

भक्ति प्रेम बढाओ, कृपा करहु स्वामी ॥ ॐ जय

दास भागवत जो जन, यह आरती गावैं।

सुख संपति सब मंगल,मनवांछित पावैं ॥ ॐ जय

॥ पुष्पाञ्जलि ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव-देव ॥

पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः । त्राहि मां पुण्रीकाक्ष सर्व पाप हरो भव ।

कायेन वाचा मनसेन्द्रि यैर्वा, बुद्धयात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।

करोमि यद् यत् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि ॥

सदा शिवायेति समर्पयामि ॥ जगदम्बिकायेति समर्पयामि ॥

नाना सुगंधि पुष्पाणि, यथा कालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिः मया दत्तः,गृहाण परमेश्वर ।

॥ क्षमा याचना ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मया देव, परिपूर्णम् तदस्तु मे ।

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि,क्षमस्व परमेश्वर ।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम । तस्मात् कारूण्य भावेन, रक्ष मां परमेश्वर ।

॥ शान्ति पाठ ॥

ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ९ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः

शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विष्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ९ शान्तिः शान्ति रेव

शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ॥

Short biography of Late Vinita Shekhar

Vinita was born at Kakinada – a small coastal town in Andhra Pradesh, India. Her father Late Sri Sheo Prasad Verma was a Chief Engineer at the British owned Deccan Sugar factory at Samalkot near Kakinada. She had two brothers. Her father died of a heart attack in 1980. Her ailing mother lives in Patna.

She was married in 1972 and her only son was born in 1976. We were overjoyed. Vinita had prayed long and hard for his birth.

We migrated in 1984 and we bought our first house in 1986 in Sydney. Vinita started her job in 1989 in the Education department. Later she moved to the Ombudsman's office and then to NSW Police.

She was 40 when she twisted her knee one evening on return from work and little did we know that it will eventually take her life. She was a devoted mother, a loving and meticulous housewife. In spite of the pain she suffered, she spent every waking hour of her life looking after us. That was the essence of her love – simple, uncomplicated and deep-rooted.

She was our cultural and religious guide - because of her we have friends, we will cherish our roots in India and we have found faith in God. She was a deeply religious, devout and traditional woman.

Soon after our son's wedding in 2004, she suffered a minor heart attack in Delhi. She came out of it bravely and mustered all her courage for her knee operation. She was operated successfully in 2005 and we thought the worst was over. But she was in a lot of pain. "**Jaan leva dard hota hai Ji**" she used to say. On the 4th day following her operation, she suffered her final heart attack and the last of her pain. She was 52.

Her last words were to her son and bahu, "Papa ka khyal rakhna", it was all she was concerned about. As a wife, she will live forever in her husband's heart. Death will not do them part. "SHAADI JANAM JANMANTAR KA RISHTA HOTA HAI".
As a mother, her loving memories will live with her son and bahu. And through them to her grandchildren.

Her friends were an essential part of her life, always ready to listen and offer comfort. They invigorated her, gave her a sense of belonging and she could not do without turning her colleagues into friends. **"She used to inspire us",** said her Commander.